हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 365, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 28 जून, 2023 दिन बुधवार | गाजीपुर/वाराणसी

तुष्टिकरण ने देश का नुकसान किया: मोदी

पीएम ने भोपाल में 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' कार्यक्रम में विपक्षी दलों पर जमकर बोला हमला

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव का शंखनाद कर दिया है। भोपाल में उन्होंने 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' कार्यक्रम में विपक्षी दलों पर जमकर हमला बोला। प्रधानमंत्री ने कहा कि तुष्टिकरण की राजनीति ने देश का बहुत नुकसान किया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता का विपक्ष सियासी फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहा है। पीएम मोदी ने समान नागरिक संहिता पर दो टूक बयान देते हुए कहा कि सियासी फायदे के लिए विपक्ष यूसीसी का इस्तेमाल कर रहा है। आज यूसीसी के नाम पर लोगों को भड़काया जा रहा है। देश दो कानूनों पर कैसे चल सकता है? संविधान भी समान अधिकारों की बात करता है...सुप्रीम कोर्ट ने भी यूसीसी लागू करने को कहा है।भाजपा मुसलमानों के पास जाकर उनके भ्रम को दूर करेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के मुसलमान भाई-बहनों को यह समझना होगा कि कौन से राजनीतिक दल उनको भड़का कर उनका राजनीतिक फायदा ले रहे हैं। हम देख रहे हैं कि यूनिफॉर्म

सिविल कोड के नाम पर ऐसे लोगों को भड़काने का काम हो रहा है। एक घर में एक सदस्य के लिए एक कानून हो और दूसरे के लिए दूसरा तो घर चल पायेगा क्या? तो ऐसी दोहरी व्यवस्था से देश कैसे चल पाएगा?

पसमंदा मुसलमानों को नहीं मिला बराबरी का हक- पीएम मोदी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार कहा, 'कॉमन सिविल कोड' लाओ, लेकिन ये वोट बैंक के भूखे लोग... वोट बैंक की राजनीति करने वालों ने पसमंदा मुसलमानों का शोषण किया है, लेकिन उनकी कभी चर्चा नहीं हुई। उन्हें आज भी बराबरी का हक नहीं मिलता।

पीएम मोदी ने कहा कि कुछ लोग सिर्फ अपने ही दल के लिए जीते हैं, दल का ही भला करना चाहते हैं और वो ये सब इसलिए करते हैं, क्योंकि उन्हें भ्रष्टाचार का, कमीशन का, कट मनी का हिस्सा मिलता है। उन्होंने जो रास्ता चुना है, उसमें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती और ये रास्ता है तुष्टिकरण का। गरीब को गरीब बनाये रखने, वंचित को वंचित बनाए रखने से ही उनकी राजनीति चलती है। तुष्टिकरण का ये रास्ता कुछ दिनों के लिए तो फायदा दे सकता है लेकिन ये देश के लिए महाविनाशक होता है। ये देश के विकास को रोक देता है, देश में भेदभाव बढ़ाता है, देश में तबाही लाता है... समाज में दीवार खड़ी करता है।

देश का भला करने का रास्ता संतुष्टिकरण है: मोदी- प्रधानमंत्री ने कहा कि एक तरफ इस तरह के लोग हैं जो तुष्टिकरण कर अपने स्वार्थ के लिए छोटे-छोटे कुनबे दूसरों के खिलाफ खड़े कर देते हैं और दूसरी तरफ हम भाजपा के लोग हैं... हमारे संस्कार अलग हैं, हमारे संकल्प बड़े हैं और हमारी प्राथमिकता दल से पहले देश की है।

हम मानते हैं कि जब देश का भला होगा तो सबका भला होगा। भाजपा ने यह तय किया है कि हमें तुष्टिकरण के रास्ते पर नहीं चलना है। देश का भला करने का रास्ता तुष्टिकरण नहीं, संतुष्टिकरण है। पीएम मोदी ने कहा कि संतुष्टिकरण का रास्ता मेहनत वाला होता है। उसमें पसीना बहाना पड़ता है। अगर बिजली मिलेगी तो सबको मिलेगी, तब लोग संतुष्ट होंगे। नल से जल का अभियान चलेगा तो हर घर तक जल पहुंचाने का प्रयास होगा। इसमें किसी के साथ भेदभाव नहीं होगा।

जेल में बंद होने के बावजूद नहीं कम हो रही हनक, माफिया चंदन सिंह ने गवाह को धमकाया

गोरखपुर। गौतमबुद्ध नगर जेल में बंद माफिया चंदन सिंह हत्या का मुकदमा दर्ज कराने वाले युवक को धमकी दे रहा है। गिरोह के सदस्य उसकी रेकी कर रहे हैं। पीड़ित ने एसएसपी को प्रार्थना पत्र देकर आरोपितों पर कार्रवाई की मांग की। इस पर चिलुआताल थाना पुलिस ने चंदन सिंह व साथियों पर मुकदमा दर्ज कर पीड़ित की सुरक्षा बढ़ा दी है। काजीपुर निवासी मुकेश सिंह ने एसएसपी को दिए प्रार्थना पत्र में लिखा है कि 13 नवंबर 2012 की शाम को दीपावली के दिन चंदन सिंह ने साथियों के साथ डोहरिया बाजार में चाचा संतोष सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में उन्होंने चिलुआताल थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। विचारण के दौरान पुलिस अभिरक्षा से चंदन सिंह फरार हो गया था, जिसकी वजह से ट्रायल की पत्रावली अलग कर दी गयी। अपर सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में इस मुकदमे का विचारण चल रहा है, जिसमें 23 जून 2023 को सुनवाई थी। इस मुकदमे में चंदन सिंह ने जमानत के लिए हाईकोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था, जो छह अप्रैल 2023 को खारिज हो चुका है। हत्या के एक मामले में चंदन सिंह और उसके पिता को आजीवन कारावास की सजा हो चुकी है।

उत्तर प्रदेश सरकार को राहत, सुप्रीम कोर्ट ने आयुष घोटाले में सीबीआइ जांच पर लगाई रोक

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश सरकार को राहत देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आयुष विभाग में विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया में धांधली के आरोपों की सीबीआइ जांच कराने के आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच के इस आदेश को चुनौती दी है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश पर रोक- जस्टिस दीपांकर दत्ता और मनोज मिश्रा की अवकाशकालीन खंडपीठ ने सोमवार को इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच के आदेश पर आंशिक रूप से रोक लगाई है। खंडपीठ ने उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सालीसिटर जनरल एमके नटराज के नोट के बाद सीबीआइ की जांच को स्थगित कर दिया।

सीबीआइ को केस दर्ज करने के थे निर्देश- लखनऊ बेंच के आदेश में सीबीआइ को केस दर्ज करने को कहा गया था। साथ ही उत्तर प्रदेश के आयुष मंत्री धरम सिंह सैनी, आयुष विभाग के तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रशांत त्रिवेदी और अन्य के खिलाफ रिश्वत लेने के आरोपों की जांच के आदेश दिए गए थे। हाई कोर्ट ने सीबीआइ को एक अगस्त तक एक स्टेटस रिपोर्ट भी देने को कहा था। हाई कोर्ट ने सीबीआइ जांच का यह आदेश डा. ऋतु गर्ग की जमानत को मंजूर करते हुए दिया था।

कालेजों की एडमिशन प्रक्रिया में धांधली के आरोप- उत्तर प्रदेश की स्पेशल टास्क फोर्स मौजूदा समय में आयुष एडमिशन घोटाले की जांच कर रही है। हाल ही में मीजार्पुर में संतुष्टि आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज की निदेशक डा. ऋतु गर्ग को गिरफ्तार कर लिया गया था। वर्ष 2019 में प्रदेश में आयुष विभाग के विभिन्न कालेजों की एडमिशन प्रक्रिया में धांधली के आरोप लगे थे।

पंजाब में आतंकी हमले की फिराक में आइएसआइ

अमृतसर। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ पंजाब में बड़ी आतंकी वारदात को अंजाम देने की फिराक में है। खुफिया एजेंसियों की गृह मंत्रालय को भेजी गई रिपोर्ट के बाद सीमा पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। खुफिया एजेंसी के एक अधिकारी ने बताया कि आइएसआइ ड्रोन के जरिये पंजाब से लगती भारतीय सीमा में हथियारों की खेप गिरा चुकी है। भारतीय सीमा में इसे तस्कर ठिकाने भी लगा चुके हैं। इस सारे मामले को लेकर गृह मंत्रालय को रिपोर्ट भेजी गई है। खुफिया एजेंसियां पंजाब पुलिस के अधिकारियों के साथ मिलकर पुराने आतंकियों का रिकार्ड भी खंगाल रही हैं। खुफिया एजेंसियों के मुताबिक, पाकिस्तान में आतंकी परमजीत सिंह पंजवड़ व कनाडा में खालिस्तान टाइगर फोर्स के चीफ हरदीप सिंह निज्जर की हत्या तथा खालिस्तान समर्थक अवतार सिंह खंडा की मौत के बाद आइएसआइ ऐसे हैंडलर की तलाश कर रही है जो पंजाब में आतंक फैला सके। कनाडा बैठा आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू पंजाब के युवाओं को गुमराह करने के लिए लगातार खालिस्तान समर्थकों के संपर्क में हैं।

ममता का दावा- केंद्र में भाजपा 6 महीने और रहेगी फरवरी-मार्च 2024 में हो जाएंगे लोकसभा चुनाव

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को दावा किया कि केंद्र में भाजपा सरकार सिर्फ छह महीने और है क्योंकि अगले साल फरवरी मार्च में चुनाव हो जाएंगे। जलपाईगुड़ी में एक जनसभा को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने ये दावा किया। ममता बनर्जी ने ये भी कहा कि बीएसएफ को निष्पक्षता से काम करना चाहिए क्योंकि भाजपा शायद कल सत्ता में ना रहे। टीएमसी चीफ ने कहा कि अगला लोकसभा चुनाव अगले साल फरवरी मार्च में हो सकता है। ऐसे में भाजपा सरकार का कार्यकाल महज छह महीने का और है। भाजपा को अपनी हार दिख रही है और वह विभिन्न समुदायों को लुभाने की कोशिश भी नहीं कर रही है। उल्लेखनीय है कि साल 2019 में लोकसभा चुनाव अप्रैल-मई में हुए थे। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल की शपथ 30 मई 2019 को ली थी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने जनसभा के

दौरान ये भी कहा कि जो लोग सीमावर्ती इलाकों में बीएसएफ की फायरिंग में मारे गए हैं, उनके परिजनों को दो-दो लाख रुपए की आर्थिक सहायता और नौकरी दी जाएगी। बनर्जी ने कहा कि वह बीएसएफ के सभी जवानों पर आरोप नहीं लगा रही हैं, वह हमारी सीमा की रक्षा करते हैं लेकिन बीएसएफ को निष्पक्षता से काम करना चाहिए हो सकता है भाजपा कल सत्ता में ना रहे लेकिन उन्हें अपनी नौकरी करनी होगी। ममता बनर्जी ने सीमावर्ती इलाकों में बीएसएफ पर मतदाताओं को डराने का आरोप लगाया था। हालांकि बीएसएफ ने ममता बनर्जी के आरोपों को पूरी तरह खारिज कर दिया और कहा कि उनके बयान सच से परे हैं। बता दें कि पश्चिम बंगाल में 8 जुलाई को पंचायत चुनाव के लिए मतदान होना है।

ममता बनर्जी के हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग- जलपाईगुड़ी में जनसभा को संबोधित करने के बाद बागडोगरा जाते हुए ममता बनर्जी के हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। दरअसल खराब मौसम के चलते दृश्यता काफी कम थी, ऐसे में ममता बनर्जी के हेलीकॉप्टर की सीवोक एयरबेस पर इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी।

देश के 80 फीसद हिस्सों में पहुंचा मानसून

नई दिल्ली। इस बार मानसून लगातार चौंका रहा है। रविवार को मुंबई और दिल्ली में एक साथ दस्तक देने के बाद सोमवार तक बहुत तेजी से यह देश के 80 प्रतिशत क्षेत्रों में पहुंच गया है। 1961 के बाद पहली बार ऐसा हुआ है कि मानसून ने मुंबई और दिल्ली में साथ प्रवेश किया। मौसम विभाग के मुताबिक, दक्षिण-पश्चिम मानसून सोमवार को गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब के कुछ हिस्सों व पश्चिम हिमाचल क्षेत्र में भी पहुंच गया। गुजरात, राजस्थान और पंजाब के कुछ इलाके बचे हुए हैं, जहां अभी मानसून नहीं पहुंचा है। अनुमान है कि दो दिन में वहां भी पहुंच जाएगा। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि आमतौर पर निम्न दबाव का क्षेत्र बनने के बाद मानसून सक्रिय होता है। इस साल मानसून के पैटर्न में थोड़ा बदलाव भी देखा जा रहा है। शुरूआत में गति बहुत धीमी रही थी। यही कारण था कि मुंबई में मानसून को पहुंचने में दो हफ्ते की देरी हुई। हालांकि, बंगाल की खाड़ी में बने कम दबाव के क्षेत्र ने अचानक इसे गति दे दी है। इसलिए दिल्ली में मानसून अनुमान से पहले पहुंच गया और अब तेजी से पूरे देश में छा रहा है। आईएमडी के अनुसार, आने वाले पांच दिनों तक अधिकांश राज्यों में भारी बारिश हो सकती है। इस बीच, दिल्ली में मानसून पहुंचने के दूसरे दिन देर रात कई इलाकों में भारी वर्षा हुई। बारिश के बाद तापमान में भी

गिरावट देखने को मिली है। मौसम विभाग के अनुसार पूर्व-मध्य, उत्तर-पश्चिम और पश्चिमी भारत में चार-पांच दिन तक वर्षा होने की संभावना है। दिल्ली में भी पांच दिन तक हल्की से मध्यम स्तर की वर्षा हो सकती है। मंगलवार को मौसम विभाग ने दिल्ली के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इसका अर्थ है कि मंगलवार को मध्यम स्तर की वर्षा हो सकती है।

सड़क नेटवर्क को लेकर गडकरी का दावा, पिछले 9 साल में 59 प्रतिशत बढ़ा; अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर भारत

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को कहा कि पिछले नौ वर्षों में किए गए मोदी सरकार के विकास कार्यों के तहत भारत का सड़क नेटवर्क 59 प्रतिशत बढ़कर दुनिया में अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। गडकरी ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आज के समय में देश का सड़क नेटवर्क करीब 1,45,240 किलोमीटर है जबकि वित्त वर्ष 2013-14 में यह सिर्फ 91,287 किलोमीटर ही था।

इस तरह देश के सड़क नेटवर्क में पिछले नौ वर्षों के दौरान 59 प्रतिशत की उच्च वृद्धि हुई है। उन्होंने मोदी सरकार के नौ वर्षों की उपलब्धियों पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आज भारत का सड़क नेटवर्क अमेरिका के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। इस दौरान सड़क निर्माण के क्षेत्र में भारत ने

सात विश्व रिकॉर्ड भी कायम किए।

टोल प्लाजा पर वाहनों के इंतजार करने का समय- गडकरी ने कहा कि बीते नौ वर्षों में टोल से मिलने वाला राजस्व भी 4,770 करोड़ रुपये से बढ़कर 41,342 करोड़ रुपये हो चुका है। उन्होंने कहा कि सरकार का इरादा टोल राजस्व को वर्ष 2030 तक 1.30 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाने का है। उन्होंने कहा कि टोल संग्रह के लिए फास्टैग प्रणाली का इस्तेमाल किए जाने से टोल प्लाजा पर वाहनों के इंतजार करने का समय घटकर 47 सेकंड रह गया है। उन्होंने कहा कि सरकार इस समय को 30 सेकंड के भीतर लाने के लिए कुछ और कदम उठा रही है।

मणिपुर को दहलाने की साजिश नाकाम, असम राइफल्स ने बरामद किए हथियार, विस्फोटक

इंफाल। असम राइफल्स और कोहिमा पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल की है और मणिपुर में की जा रही हथियारों की सप्लाई की साजिश को नाकाम कर दिया है। असम राइफल्स ने नगालैंड पुलिस के साथ मिलकर यह ऑपरेशन चलाया। बता दें कि मणिपुर में एक महीने से भी ज्यादा समय से हिंसा चल रही है और वहां हिंसा की घटनाओं में अभी तक 100 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। रक्षा मंत्रालय ने बयान जारी कर बताया कि सुरक्षा बलों को खूफिया सूचना प्राप्त हुई थी। जिसमें बताया गया था कि कुछ संदिग्ध हिंसाग्रस्त राज्य मणिपुर में हथियारों की तस्करी करने की कोशिश कर रहे हैं। सूचना के आधार पर असम राइफल्स और कोहिमा की पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन चलाया। ऑपरेशन के तहत 26 जून की रात करीब दो बजे पुलिस को एक वाहन में कुछ संदिग्ध दिखाई दिए। इनका पीछा करने पर सुबह करीब छह बजे संदिग्धों को पकड़ लिया गया। सुरक्षा बलों ने संदिग्धों के पास से दो पिस्टल, चार मैगजीन, विस्फोटक और अन्य सामान बरामद किया। बता दें कि मणिपुर में अभी तक 1100 हथियार,

13702 गोला बारूद, 250 बम और अन्य सामान बरामद किया गया है। सुरक्षा बल राज्य में शांति के लिए हिंसा प्रभावित इलाकों में फ्लैग मार्च निकाल रहे हैं। मणिपुर में हिंसा शुरू हुए 52 दिन बीत चुके हैं। रविवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में मणिपुर के हालात पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक भी हुई थी।

अतीक-अशरफ की हत्या में यूपी सरकार का हाथ', सुप्रीम कोर्ट में बहन ने लगाया आरोप

नई दिल्ली। प्रयागराज में पुलिस कस्टडी में 15 अप्रैल की रात में गोलियों से भूने गए माफिया अतीक अहमद और अशरफ की हत्या के मामले में उसकी बहन आयशा नूरी ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। अतीक और अशरफ की बहन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। आयशा नूरी ने आरोप लगाया है कि अतीक और अशरफ की हत्या में सरकार का हाथ है। उन्होंने कथित तौर पर एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश या एक स्वतंत्र एजेंसी की अध्यक्षता में व्यापक जांच की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। इसके साथ ही आयशा नूरी ने अपने भतीजे और अतीक अहमद के बेटे की मुठभेड़ में हत्या की भी जांच की मांग की। अतीक की बहन आयशा नूरी ने अधिवक्ता के जरिए से सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है। याचिका में आयशा नूरी ने अपने दोनों भाई के कत्ल को कस्टडी में और एक्स्ट्रा जूडिशियल किलिंग करार दिया। याचिका में कहा है कि उच्चस्तरीय सरकारी एजेंटों के जरिए घटना की योजना बनाई गई। उन्होंने उसके परिवार के सदस्यों को मारने के लिए प्लान बनाया। पुलिस अफसरों को उत्तर प्रदेश सरकार का पूरा समर्थन मिला है। आरोप है कि

प्रतिशोध के तहत उसके परिवार के सदस्यों को मारने, अपमानित करने, गिरफ्तार करने और परेशान करने के लिए पुलिस अफसरों को पूरी छूट दी हुई है। माफिया अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की 15 अप्रैल की रात को प्रयागराज के कॉल्विन हॉस्पिटल के बाहर पुलिस हिरासत में तीन हमलावरों ने गोलियां बरसाकर हत्या कर दी थी। अतीक और अशरफ पर हमला करने वाले तीनों हमलावर मीडियाकर्मी बनकर वहां पहुंचे थे। हत्याकांड के तीनों आरोपियों को पुलिस ने घटना स्थल से ही पकड़ लिया था। तीनों शूटरों की पहचान लवलेश तिवारी, अरुण मौर्य और सनी सिंह के रूप में हुई थी। तीनों कातिल जेल में बंद हैं। आपको बता दें कि 24 फरवरी को प्रयागराज में उमेश पाल की हत्या के बाद से ही माफिया अतीक अहमद गैंग यूपी एसटीएफ और पुलिस के निशाने पर था। लगातार अतीक से पूछताछ चल रही थी। साबरमती जेल से अतीक और बरेली जेल से अशरफ को प्रयागराज लाकर पुलिस पूछताछ में जुटी थी। 15 अप्रैल को पुलिस देर रात दोनों माफिया बंधुओं का मेडिकल चेकअप कराने के लिए अस्पताल लाई थी। अस्पताल के बाहर ही मीडियाकर्मी बन कर आए तीन हमलावरों ने दोनों भाइयों को गोली मार दी थी, दोनों की मौका ए वारदात पर ही मौत हो गई थी।

पहली बार रोडवेज में होगी महिला चालकों की भर्ती, 24 माह के प्रशिक्षण के बाद होगी तैनाती

गोरखपुर। परिवहन निगम पहली बार संविदा पर महिला चालकों की भर्ती करेगा। ये महिलाएं रोडवेज की पिंक बसें चलाएंगी। इसके लिए पहले उन्हें 24 माह का प्रशिक्षण दिया, फिर तैनाती की जाएगी। सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक महेश चंद्र ने बताया कि महिला चालकों को लाइट मोटर व्हीकल ड्राइवर लेवल-3 और व्यावसायिक व्हीकल ड्राइवर लेवल-4 दोनों ही कोर्स का प्रशिक्षण दिया जाएगा। दोनों कोर्स के बाद 17 माह का प्रशिक्षण डिपो में होगा। इस दौरान उन्हें छह हजार रुपये प्रति माह दिए जाएंगे। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं के रहने और खाने की व्यवस्था निगम की ओर से निशुल्क की जाएगी। प्रशिक्षण के बाद पिंक बस संचालित करने के लिए संविदा पर इन महिला चालकों की तैनाती कर दी जाएगी। एआरएम ने बताया कि महिलाओं का आठवीं पास होना अनिवार्य है। ऊंचाई 5 फीट 3 इंच से कम नहीं और उम्र अधिकतम 34 वर्ष होनी चाहिए। आवेदन के लिए आधार कार्ड, बैंक पासबुक और एक फोटो की आवश्यक्ता होगी। आवेदन संबंधी जानकारी के लिए 9792746532 और 8726005222 मोबाइल नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।

संपादकीय

व्यवस्थागत बदहाली के कारण महिला रेल यात्री की गई जान

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन परिसर में व्यवस्थागत लापरवाही की कीमत जिस तरह एक महिला को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी, उससे एक बार फिर यही साबित होता है कि सरकारी महकमों को होश तभी आता है जब कोई बड़ा हादसा हो जाए। इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि देश की राजधानी होने के नाते नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को व्यवस्था के स्तर पर हर तरह से चाक-चौबंद बताया जाता रहता है, लेकिन वहीं परिसर में खड़ा कोई बिजली का खंभा जानलेवा साबित हो जाता है। रविवार की सुबह रेलगाड़ी से चंडीगढ़ जाने के लिए पहुंचे एक परिवार को स्टेशन परिसर में जमा बारिश के पानी को पार करके आगे बढ़ना था। परिवार में एक स्कूल शिक्षिका ने जब पानी में फिसल कर गिरने से बचने के लिए पास के एक खंभे का सहारा लेने की कोशिश की, तो उसमें प्रवाहित हो रहे करंट की वजह से उनकी जान ही चली गई। यह प्रथम दृष्टया एक हादसा लग सकता है, लेकिन साफ है कि परिसर में पानी जमा होने से लेकर खंभे में करंट प्रवाहित होना सिर्फ दायित्वों में लापरवाही और व्यवस्थागत बदहाली का नतीजा है, जिसकी वजह से एक महिला को जान गंवानी पड़ी। सवाल है कि बिजली के खंभे में करंट प्रवाहित होने की वजह और क्या हो सकती है, सिवाय इसके कि उसकी देखरेख और निगरानी करने वाले संबंधित महकमे या उसकी ओर से ड्यूटी पर तैनात किसी व्यक्ति ने अपना दायित्व सही तरीके से पूरा करने में घनघोर लापरवाही बरती? स्टेशन परिसर में बने पार्किंग क्षेत्र को किस तरह बनाया गया है कि वहां बारिश का पानी इस कदर भर गया था कि लोगों के लिए आना-जाना भी खतरनाक हो गया था। गौरतलब है कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन एक भीड़भाड़ वाली जगह है और वहां अमूमन हर वक्त ही अपने गंतव्य तक जाने वाले लोगों की खासी तादाद मौजूद रहती है। दूसरी ओर, व्यवस्था और सुविधाओं की कसौटी पर इस स्टेशन को हर स्तर पर बेहतर बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती है। लेकिन यह कैसी व्यवस्था है कि वहां ट्रेन से अपने किसी गंतव्य की ओर जाने के लिए पहुंचा कोई व्यक्ति जान गंवा बैठता है? क्या यह साफ तौर पर लापरवाही से हुई मौत का मामला नहीं है? इसके लिए किसकी जिम्मेदारी तय की जाएगी? यों व्यवस्थागत कोताही का यह कोई अकेला मामला नहीं है। आए दिन ऐसी खबरें आती रहती हैं, जिनमें यह बताया जाता है कि सड़क किनारे किसी बिजली के खंभे में प्रवाहित हो रहे करंट से अनजान कोई व्यक्ति धोखे से उसकी चपेट में आ जाता है और उसकी मौत हो जाती है। इसी तरह, मुख्य रास्ते के बीच या किनारे मैनहोल या फिर खुले नाले किसी की मौत को न्योता दे रहे होते हैं, जिनमें गिर कर नाहक ही किसी की जान चली जाती है। ऐसे मामलों को आमतौर पर हादसा मान लिया जाता है और इसके लिए शायद ही किसी की जिम्मेदारी तय की जाती है। जबकि ऐसी घटनाएं सीधे-सीधे संबंधित महकमों के दायित्वों के निर्वहन में बरती गई घनघोर लापरवाही का नतीजा होती हैं और इसके लिए पर्याप्त मुआवजा दिया जाना चाहिए। आम रास्तों या लोगों की आवाजाही वाले इलाकों में नागरिक सुविधाएं मुहैया कराने के साथ-साथ उनके रखरखाव के लिए एक पुख्ता तंत्र होता है। लेकिन आमतौर पर ये कागजों में ही शोभा पाते रहते हैं और इसका खमियाजा आम लोगों को उठाना पड़ता है। जरूरत इस बात की है कि ऐसी हर घटना के बाद जिम्मेदारी तय की जाए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो, ताकि भविष्य में हादसे के नाम पर ऐसे मामलों को पूरी तरह रोका जा सके।

बढते तापमान और जलवायु परिवर्तन से घटने लगी हैं ऑक्सीजन

पर्यावरणविदों और भूगोलवेताओं के अनुसार जलवायु परिवर्तन ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है। बढते तापमान के कारण समुद्र के साथ झीलों में तेज गति से ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है। जिसके कारण झीलों में जैव विविधता क्षीण होती जा रही है। भूगोलवेत्ताओं के अनुसार आज से लगभग साढे चार अरब वर्ष पूर्व पृथ्वी का आविर्भाव हुआ। सौरमण्डल के समस्त ग्रहों में सूर्य से उत्तम दूरी पर स्थित पृथ्वी पर ही केवल जीवन पाया जाता है। सौरमण्डल के सभी ग्रहों में केवल पृथ्वी पर जीवन पाए जाने का सबसे बड़ा कारण समुचित और संतुलित मात्रा में प्राण वायु ऑक्सीजन की उपलब्धता हैं। संगठनात्मक दृष्टि से वायुमंडल में नाइट्रोजन के उपरांत सबसे अधिक मात्रा में (लगभग 21प्रतिशत) ऑक्सीजन की उपलब्धता हैं। प्राचीन और अवार्चीन वैज्ञानिकों के अनुसार ऑक्सीजन का वायुमंडल में अस्तित्व आज से ढाई अरब वर्ष पहले माना जाता है और तभी से लगभग जल में जीवन की उत्पत्ति का आरम्भ भी माना जाता हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि-मनुष्य सहित समस्त जीवो की सांसों और धड़कनो का सारा कारोबार इसी ऑक्सीजन पर निर्भर हैं। सांसों और धड़कनो का कारोबार खत्म होते ही जीवन लीला समाप्त हो जाती हैं। प्रकारांतर से ऑक्सीजन और जीवन एक दूसरे पर्यायवाची है। वैसे तो ऑक्सीजन पृथ्वी के लगभग हर पदार्थ में थोड़ी-बहुत मात्रा में पाया जाता हैं परन्तु सर्वाधिक मात्रा में यह पानी में पाया जाता हैं। वायुमंडल में यह स्वतंत्र रूप से पाया जाता है और वायुमंडल में इसकी उपलब्धता लगभग इक्कीस प्रतिशत हैं परन्तु भूपर्पटी पर इसकी उपलब्धता लगभग 46 प्रतिशत होती हैं। यह मनुष्य सहित समस्त जीव जंतुओं के लिए जीवनप्रदायिनी गैस तो है ही इसके साथ अपने बहुआयामी गुणधर्मिता के कारण ऑक्सीजन की उपयोगिता और मांग विविध क्षेत्रों में निरंतर बढती जा रही हैं। पानी की तरह रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन ऑक्सीजन को सामान्यतः प्राणवायु और जारक इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। प्राणवायु के साथ जारक नाम इसलिए दिया जाता हैं क्योंकि ऑक्सीजन के कारण ही कोई वस्तु जलती हुई नजर आती हैं। ज्वलनशीलता के गुण के आधार पर ही ऑक्सीजन को पहचाना जाता हैं तथा इसी गुण के कारण इसकी व्यवसायिक और औद्योगिक महत्ता बढती जा रही हैं। एक स्पष्ट रासायनिक तत्व के रूप में ऑक्सीजन की पहचान अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हूई। पन्द्रहवीं शताब्दी में पुनर्जागरण और धर्म सुधार आन्दोलन ने रोमन साम्राज्य के पतन के उपरांत अंधकार में डूबें यूरोपीय समाज को जागृत कर दिया। इन दोनों आन्दोलनों के फलस्वरूप यूरोपीय महाद्वीप में तर्क, बुद्धि, विवेक तथा आधुनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जागरण हुआ। वैसे तो इन दोनों आन्दोलनों का आरम्भ इटली और जर्ममी में हुआ परन्तु इसका सर्वाधिक गहरा असर इंग्लैंड पर हुआ। यूरोपीय महाद्वीप के सर्वाधिक वैज्ञानिक चमत्कार करने वाले तथा सबसे अधिक वैज्ञानिक पैदा करने वाले इंग्लैंड के पादरी और वैज्ञानिक जोसेफ प्रिस्टले और सी डब्ल्यू शीले ने ऑक्सीजन की खोज, प्राप्ति और प्रारम्भिक अध्ययन पर महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कार्य किया। जोसेफ प्रिस्टले ने अपनी प्रयोगशाला में 1774 ईसवीं में मरक्यूरिक ऑक्साइड को गर्म करके ऑक्सीजन गैस तैयार किया था। हालांकि इसके पहले कार्ल शीले ने 1772 में पोटैशियम नाइट्रेट को गर्म करके ऑक्सीजन गैस तैयार किया था परन्तु उनका यह प्रयोगात्मक शोध 1777 ईसवीं में प्रकाशित हुआ और इसीलिए जोसेफ प्रिस्टले को ऑक्सीजन गैस का खोजकर्ता माना जाता है। इसके उपरांत ऑक्सीजन के गुण-धर्म के अध्ययन का सिलसिला शुरू हो गया। एन्टोनी लैवोइजियर ने इसके रासायनिक गुणों का गहनता से अध्ययन करते हुए इसके गुणों का वर्णन किया और इसे "ऑक्सीजन" नाम दिया जिसका अर्थ होता है "अम्ल उत्पादक "जैसे -जैसे ऑक्सीजन के गुण-धर्म पर अध्ययन बढता गया वैसे-वैसे इसकी उपयोगिता भी बढती गई। हमें समवेत स्वर से उन समस्त वैज्ञानिकों को बधाई देना चाहिए जिन्होंने ऑक्सीजन को स्पष्ट पहचान दिया और चिकित्सकीय ऑक्सीजन तैयार करने सफलता प्राप्त की। वैसे तो चिकित्सकीय सुविधाओं से सुसज्जित और संसाधनों से परिपूर्ण अस्पतालों के आपातकालीन कक्षाओं में गम्भीर मरीजो के चेहरो पर ऑक्सीजन मॉस्क से जरूर हम परिचित थे परन्तु कोरोना संकट काल में ऑक्सीजन की किल्लत सर्वाधिक चर्चा का विषय रही। वह आम आदमी भी जिसे रसायन विज्ञान का ककहरा भी नहीं मालूम वह ऑक्सीजन और ऑक्सीजन के महत्व से भलीभाँति परिचित हो गया । कोरोना की दूसरी लहर में जिंदगी बचाने की जद्दोजहद ने अपनी तरक्की की बुलंदियों पर गुमान करने वाले इंसान को ऑक्सीजन की महत्ता से ढंग से रूबरू करा दिया। अप्रैल और मई के महीने में ऑक्सीजन के लिए सारे देश में हाहाकार मचा हुआ था। देश के चर्चित नामी-गिरामी अस्पतालो से लेकर सरकारे भी हलकान परेशान नजर आई। वर्तमान समय में ऑक्सीजन का चिकित्सकीय महत्व के साथ साथ व्यवसायिक महत्व भी है।

असंतुलित विकास और पोषणीय विकास की चेतना के अभाव के कारण हमने औद्योगिक और व्यवसायिक ऑक्सीजन पर ध्यान दिया परन्तु चिकित्सकीय ऑक्सीजन पर उतना ध्यान नहीं दिया। लौह इस्पात उद्योग में ऑक्सीजन का उपयोग सर्वाधिक होता हैं। द्रव ऑक्सीजन को कार्बन और पेट्रोलियम के साथ मिला दिया जाए तो यह अत्यंत विस्फोटक हो जाता हैं। अति विस्फोटन की गुणधर्मिता के कारण ही ऑक्सीजन का प्रयोग कठोर चट्टानों को तोडने और लोहे की चादरों को काटने में किया जाता है। औद्योगिक दृष्टि से ऑक्सीजन पर अत्यधिक ध्यान के कारण ही कोरोना संकट में ऑक्सीजन की किल्लत का सामना करना पड़ा। इसलिए कोरोना जैसे संकटों से निपटने के लिए हमें अधिक से अधिक चिकित्सकीय दृष्टि से भी ऑक्सीजन प्लांट लगाने पर विचार करना होगा। चिकित्सकीय दृष्टि से ऑक्सीजन वायुमंडल में विद्यमान हवा से तैयार किया जाता हैं। एयर सेपरेशन विधि का प्रयोग करते हुए ऑक्सीजन को हवा में विद्यमान धूल नमी और अन्य अशुद्धियों को दूर किया जाता हैं और संपीडित रूप में ऑक्सीजन सिलेन्डर में सुरक्षित कर ली जाती हैं। इस ब्रह्माण्ड के सर्वाधिक अद्भुत प्राणी मनुष्य सहित समस्त जीव जंतुओं के शरीर में ऑक्सीजन की समुचित मात्रा का होना आवश्यक है। मनुष्य को होने वाली कई बिमारियों विशेषकर हृदय और फेफड़े संबंधी बिमारियों में ऑक्सीजन थेरेपी देनी पडती हैं। कोरोना संकट के दौरान आक्सीजन लेवल और आक्सीजन लेवल को नापने वाला नपना आक्सीमीटर भी खूब चर्चा का विषय रहा। यह सर्वविदित तथ्य है कि- कोरोना महामारी के दौर में ऑक्सीजन की किल्लत सर्वत्र देखने-सुनने को मिली और ऑक्सीजन के अभाव में दम तोड़ते हुए लोगों का नजारा सारे हिन्दूस्तान ने देखा। देश के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि-ऑक्सीजन के अभाव को लेकर राजनीतिक दलों में परस्पर होने वाले झगड़े को देश की जनता ने देखा। लगभग सभी टीवी चैनलो पर ऑक्सीजन को लेकर प्राइम टाइम भी चलाया गया। कोरोना संकट ने चिकित्सकीय ऑक्सीजन की उपलब्धता के साथ-साथ हमारी लचर स्वास्थ्य सुविधाओं की भी कलई खोलकर दी। एक तरफ ऑक्सीजन के अभाव में लोग दम तोड़ते रहे दूसरी तरफ ऑक्सीजन को लेकर सियासी ड्रामा भी खूब चलता रहा। भारत के नीति निमार्ताओं को कोरोना संकट से अनुभव लेते हुए ऑक्सीजन की उपलब्धता और स्वास्थ्य सुविधाओं पर गम्भीरता से कार्य करना होगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21मे कहा गया है कि- "प्रत्येक भारतीय को जिंदा रहने का अधिकार है "। परन्तु जिन्दा रहने का अधिकार तभी कारगर हो सकता है जब जीवन जीने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन उपलब्ध हो। इसलिए वायुमंडल में इसकी उपलब्धता निरंतर बनी रहे इसके लिए दलगत राजनीति से ऊपर उठकर हमको सामूहिक प्रयास करना होगा। ऑक्सीजन को लेकर कोई सियासी खेल नहीं होना चाहिए। वर्तमान संसद के सत्र में भारत के स्वास्थ्य मंत्री यह वक्तव्य कि-ऑक्सीजन के अभाव में कोई मौत नहीं हुई निश्चित रूप अगम्भीर और राजनीति से प्रेरित वक्तव्य हैं तथा अपनी स्वास्थ्य संबंधी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ना के समान हैं। बयानों और वक्तव्यो के माध्यम से महज लीपा-पोती कर सकते हैं जनता ने जो दुख दर्द झेला उसको नहीं कम सकते हैं। कई राज्यों और कई राज्यों के अस्पताल में ऑक्सीजन की किल्लत साफ-साफ देखने को मिलीं। कोरोना संकट के दौर में ऑक्सीजन की किल्लत को देखते हुए हमें वायुमंडल में ऑक्सीजन की समुचित उपलब्धता पर गम्भीरता से विचार करना होगा। वायुमंडल में इसकी पर्याप्त उपलब्धता से ही चिकित्सकीय और व्यवसायिक ऑक्सीजन हमें प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो सकती हैं। इसलिए वायुमंडल में इसकी उपलब्धता के लिए ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाले पेड़ पौधों को लगाने पर बल देना होगा ।भारतीय जनमानस में यह धारणा प्रचलित है कि-पीपल के वृक्ष में सर्वाधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने की क्षमता होती हैं। इसलिए ऑक्सीजन को लेकर सियासी खेल करने वालों को ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाले पेड़ पौधों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। कुदरत ने निःशुल्क रूप से पर्याप्त रूप से ऑक्सीजन उपलब्ध किया था परन्तु विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने पर्यावरण का संतुलन बिगड़ दिया। आज फिर से पर्यावरण संतुलन पर सामूहिक रूप से विचार करना होगा। हर जिंदगी हंसती खिलखिलाती और मुस्कराती रहे इसके लिए अपनी लालच और हबस पर नियंत्रण करना होगा तथा भावी पीढ़ियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए विकास की रूपरेखा तैयार करनी होगी। अगर हम सचेत नहीं हुए तो जिस तरह हम पानी की बोतल खरीद कर साथ लेकर चल रहे हैं उसी तरह हमें ऑक्सीजन की बोतल या सिलेन्डर लेकर चलना पडेगा।

मनोज कुमार सिंह प्रवक्ता
लेखक/ साहित्यकार /उप सम्पादक कर्मश्री मासिक पत्रिका

एमएसएमई वाराणसी ने लघु उद्योग भारती काशी संग मनाया अंतराष्ट्रीय एमएसएमई दिवस

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी । एमएसएमई डीएफओ तथा लघु उद्योग भारती काशी के द्वारा संयुक्त रूप से अंतराष्ट्रीय एमएसएमई दिवस मनाया गया इस अवसर पर उद्यमियों का सम्मान किया गया ` आर के चौधरी असिस्टेंट डायरेक्टर एमएसएमई तथा प्रभात सिन्हा लीड डिस्ट्रिक मैनेजर बैंक ने सयुक्त रूप से राजेश कुमार सिंह अध्यक्ष लघु उद्योग भारती काशी प्रांत का सम्मान किया इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रभात सिन्हा एल डी एम वाराणसी थे जिनका स्वागत करने के पश्चात आर के चौधरी एवं रितेश बरनवाल असिस्टेंट डायरेक्टर द्वारा एमएसएमई दिवस का महत्व व उद्देश्य पर प्रकाश डाला

गया मुख्य अतिथि प्रभात सिन्हा द्वारा उद्यमियों एवं व्यापारियों के हित में बैंक द्वारा दिए जा रहे वित्तीय योजनाओं की जानकारी दी गई ` राजेश कुमार सिंह अध्यक्ष लघु उद्योग भारती काशी प्रांत ने उद्यमियों के हित में संगठन काशी द्वारा किए जा रहे कार्यों को विस्तार से बताया तथा उद्यमियों के लिए प्रत्येक फोरम पर उनकी आवाज पहुंचाते रहने का विश्वास दिलाया` इस सफल आयोजन का संचालन हिमांशु शेखर कस्टोडियन एमएसएमई टूल रूम द्वारा किया गया उन्होंने संस्थान द्वारा कराए जा रहे विषयों की जानकारी दी ` इस कार्यक्रम में लघु उद्योग भारती संगठन के उद्यमी भूप नारायण सिंह, विजय कुमार, ज्योति शंकर मिश्रा,सर्वेश श्रीवास्तव, अमन जायसवाल, मनोज कुमार सहित एमएसएमई टूल रूम के प्रशिक्षक कुमारी प्रियंका,प्रतुष श्रीवास्तव, राज किरण, प्रशिक्षु उपस्थित थे।

आगामी त्योहारों के मद्देनजर डीएम एसपी ने किया रूट मार्च, शांति पूर्वक त्यौहार मनाने की अपील

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। आगामी बकरीद, श्रावण मास, एवं मुहर्रम के त्यौहार को शान्तिपूर्ण एंव आपसी सौहार्द के साथ मनाये जाने के उद्देश्य से आज जिलाधिकारी आर्यका अखौरी, पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह एव अन्य वरिष्ठ अधिकारियो, भारी पुलिस बल के साथ जंगीपुर क्षेत्र के विभिन्न मार्गो एवं स्थलो पर रूट मार्च कर त्यौहार को शान्तिपूर्ण ढंग से मनाने की अपील की। अधिकारी द्वय द्वारा जंगीपुर यादव मोड़ से जंगीपुर बाजार होते हुए जंगीपुर मण्डी तक रूट मार्च कर लोगो से आपसी सौहार्द के साथ त्यौहार मनाने की अपील की। उन्होने कहा कि श्रवाण मास में काफी संख्या में श्रद्धालु, कावड़ यात्रियों की भीड़-भाड़ एवं मुख्य मंदिरो पर जलाभिषेक हेतु आवागमन होता है। वकरीद पर सार्वजनिक नमाज एवं मोहर्रम में जुलूस एवं ताजिये निकलते है जो अपने पूर्व की भाँति ही सम्पन्न होगा कोई भी नये कार्य नही किये जायेगे। उपद्रवियों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। उन्होने जनमानस से अपील करते हुए कहा कि किसी भी अफवाह पर ध्यान न देते हुए आपसी भाई चारे के साथ त्यौहार को मनाये। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी सदर प्रतिभा मिश्रा, एसपी सिटी, क्षेत्राधिकारी सदर एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

किसानों की आय का तेजी से दोगुना होना मोदी सरकार की नीतियों की बड़ी सफलता है

भारत में लगभग 60 प्रतिशत आबादी आज भी ग्रामीण इलाकों में रहती है एवं इसमें से बहुत बड़ा भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। यदि ग्रामीण इलाकों में निवास कर रहे नागरिकों की आय में वृद्धि होने लगे तो भारत के आर्थिक विकास की दर को चार चांद लगाते हुए इसे प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत से भी अधिक किया जा सकता है। इसी दृष्टि से केंद्र सरकार लगातार यह प्रयास करती रही है किसानों की आय को किस प्रकार दुगुना किया जाये। इस संदर्भ में कई नीतियों एवं सुधार कार्यक्रम लागू करते हुए किसानों की आय को दुगुना किये जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। अप्रैल 2016 में इस सम्बंध में एक मंत्रालय समिति का गठन भी केंद्र सरकार द्वारा किया गया था एवं किसानों की आय बढ़ाने के लिए सात स्त्रोतों की पहचान की गई थी, इनमें शामिल हैं- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करना, पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि करना, संसाधन के उपयोग में दक्षता हासिल करते हुए कृषि गतिविधियों की उत्पादन लागत में कमी करना, फसल की सघनता में वृद्धि करना, किसान को उच्च मूल्य वाली खेती के लिए प्रोत्साहित करना (खेती का विविधिकरण), किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य दिलाना एवं अधिशेष श्रमबल को कृषि क्षेत्र से हटाकर गैर कृषि क्षेत्र के पेशों में लगाना। उक्त सभी क्षेत्रों में केंद्र सरकार द्वारा किए गए कई उपायों के अब सकारात्मक परिणाम दिखाई देने लगे हैं एवं कई प्रदेशों में किसानों के जीवन स्तर में सुधार दिखाई दे रहा है, किसानों की खर्च करने की क्षमता बढ़ी है एवं कुल मिलाकर अब देश के किसानों का आत्मविश्वास बढ़ा है। प्राचीन भारत में तो सनातन संस्कृति का पालन करते हुए विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में गाय पालन की गतिविधियां बहुत बड़े स्तर पर चलाई जाती थी। उस खंडकाल में गाय पालन से दरअसल बहुत अधिक आर्थिक लाभ होता था। गाय के गोबर का इस्तेमाल खाद के रूप में किया जाता था, गाय के दूध से डेयरी उत्पादों का निर्माण कर बाजार में बेचा जाता था, गौ मूत्र का दवाई के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, आदि। ग्रामीण इलाकों में किसी भी परिवार की सम्पन्नता इस बात से आंकी जाती थी कि किस परिवार में गाय की संख्या कितनी है। कृषि कार्य के अतिरिक्त लगभग समस्त परिवार गाय पालन की गतिविधि में भी संलग्न रहते थे एवं इससे यह उनकी आय का एक अतिरिक्त साधन बन जाता था। इसी तर्ज पर वर्तमान में केंद्र सरकार द्वारा ग्रामीण इलाकों में किसानों के लिए पशुपालन की गतिविधि को एक अतिरिक्त स्त्रोत के रूप में बढ़ावा दिया गया है। पिछले 9 वर्षों के दौरान केंद्र सरकार द्वारा कृषि के लिए बजट आवंटन में अभूतपूर्व वृद्धि की गई है। वर्ष 2015-16 में कृषि बजट के लिए 25,460 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था, जो वर्ष 2022-23 में बढ़कर 138,551 करोड़ रुपए का हो गया है।

नमामि गंगे योजना के तहत गंगा आरती शुरू, मौके पर डीएम एसपी रहे मौजूद

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मिशन लाइफ के अर्न्तगत जिला गंगा समिति के सौजन्य से चीतनाथ घाट पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं गंगा आरती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रभागीय निदेशक गाजीपुर द्वारा समस्त अतिथियों स्वागत किया गया। गंगा स्वच्छता पर नुक्कड़ नाटक , तथा स्कूल के छात्राओं द्वारा गंगा गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात काशी बटुक नाथ दरबार बृहद मंत्रोच्चार के साथ गंगा आरती की गयी स्थानीय लोगों द्वारा बढ़ चढ़ के प्रतिभाग किया गया। आरती के त्तपश्चात उपस्थित लोगो को गंगा स्वच्छता की शपथ दिलाई गई जिलाधिकारी द्वारा गाजीपुर के घाटों के स्वच्छ बनाये रखने हेतु जनता से अपील की गयी एवं घाटों पर समितियां बनाकर लगातार प्रतिदिन या साप्ताहिक गंगा आरती कराएं हेतु लोगों से यह आग्रह किया कि आरती वाराणसी के घाटों जैसे होनी चाहिए। यह बताते चलें कि पवित्र माह सावन कुछ ही दिनों में शुरू होने वाला है। जिसमें सोमवार का विशेष महत्व है इसी महत्व को देखते हुए गंगा आरती का कार्यक्रम सोमवार के दिन से आरंभ किया गया है। गंगा आरती की आयोजक चेतना गंगा समिति के अध्यक्ष शंकर पांडे ने बताया कि जिस तरह से काशी की गंगा आरती काशी की अपनी पहचान है, उसी तरह से लहुरी काशी यानी गाजीपुर में भी गंगा आरती प्रत्येक सोमवार को हो ऐसा कमेटी का प्रयास है। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक शहर, उपजिलाधिकारी सदर, क्षेत्राधिकारी शहर, अन्य अधिकारी कर्मचारी एवं नागरिकगण उपस्थित रहें।

दिल्ली, मुंबई की महंगी बाईपास सर्जरी काशी के सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल में हुई मरीज की बची जान

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। कैण्ट रोडवेज स्थित काशी के प्रथम कारपोरेट सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल के सभागार में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया` इस प्रेस वार्ता के माध्यम से सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल ने अपनी सेवाओं के विस्तार में एक नया आयाम जोड़ते हुए सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल के प्रथम बाईपास सर्जरी के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने पर विस्तार से जानकारी दी यह बाईपास सर्जरी CTVS Dept. के HOD डॉ. मोहित सक्सेना व उनकी टीम के द्वारा किया गया। डॉ. मोहित सक्सेना द्वारा मरीज की स्थिति व सर्जरी के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई उन्होंनें बताया कि 41 वर्षीय मरीज को लगभग 6 माह पूर्व दिल का दौरा पड़ा जिसके उपरान्त एन्जियोग्राफी कराने पर तीनों धमनियों में ब्लॉकेज पाया गया` मरीज की स्थिति लगातार नाजुक होती जा रही थी और बार-बार सीने में दर्द व सांस फूलने की शिकायत बढ़ती गई मरीज की स्थिति भी लगातार नाजुक होती जा रही थी कई मरीजों के माध्यम से डॉ. मोहित सक्सेना व सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल के बारे में जानकारी मिली। सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल की सेवाओं के बारे में पूर्ण जानकारी लेने के बाद मरीज के परिजनों द्वारा दिल्ली,मुम्बई न ले जाकर यहीं पर बाईपास सर्जरी कराने का फैसला किया गया` पांच दिन पहले उपरोक्त मरीज का डॉ. मोहित सक्सेना व उनकी टीम के द्वारा बाईपास सर्जरी की गई व आज मरीज डिस्चार्ज होकर अपने घर जा रहा है मरीज की सभी रिपोर्टस नार्मल हैं एवं वह पूर्णतः स्वस्थ है जैसा कि विदित हो कि कॅण्ट रोडवेज स्थित सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल पूर्वांचल का प्रथम कापोर्रेट सुपर स्पेशियालिटी हॉस्पिटल है जहाँ पर दिल्ली, मुंबई जैसे बड़े शहरों की महंगी चिकित्सा सुवधायें रियायती मूल्य पर उपलब्ध है।

आ गया बदलाव!

सादगी से आए थे ।
करने को वो काम ।।
लेकिन ऐसी छवि ।
हो रही नाकाम ।।
ताने और व्यंग्य का ।
आ गया अब दौर ।।
पड़ रहा ना फर्क पर ।
शांत हैं सिरमौर ।।
कथनी और करनी में ।
आ गया बदलाव ।।
लोकतंत्र को इससे पर ।
नहीं है मिलता घाव ।।
दोहरा मापदंड है ।
सब गद्दी का खेल ।।
हो रहा सब उल्टा ।
ना खाता कुछ मेल ।।

–कृष्णेन्द्र राय

1 करोड़ के अवैध गांजा, तस्करी तथा रेकी में प्रयुक्त ट्रक व कार के साथ 4 अंतरराज्यीय गांजा तस्कर गिरफ्तार

प्रखर मिजार्पुर। पुलिस अधीक्षक 'संतोष कुमार मिश्रा' द्वारा जनपद में शांति एवं कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने तथा अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़, अवैध शराब एवं मादक पदार्थों की तस्करी व बिक्री पर अंकुश लगाते हुए तस्करी में संलिप्त अभियुक्तों की गिरफ्तारी व प्रभावी कार्यवाही करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षगण को निर्देश दिया गया है। उक्त निर्देश के अनुक्रम में क्षेत्राधिकारी लालगंज के नेतृत्व में थाना ड्रमण्डगंज, स्वाट/सर्विलांस व एसओजी की संयुक्त पुलिस टीम को बड़ी सफलता हाथ लगी है । दिनांकः26.06.2023 को थाना ड्रमण्डगंज पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि ट्रक में भारी मात्रा में अवैध मादक पदार्थ लादकर मीरजापुर से प्रयागराज ले जाया जा रहा है । उक्त सूचना के आधार परथाना ड्रमण्डगंज, स्वाट/सर्विलांस व एसओजी की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा सघन वाहन चेकिंग कर कार व ट्रक में सवार कुल 04 व्यक्तियों को वाहन सहितपकड़ा गया ।पकड़े गये अभियुक्त 1.आशीष कुमार पाण्डेय, 2.कोमल प्रसाद, 3.जगन्नाथ मारवी उर्फ जगन्नाथ ठाकुर व 4. संदीप कुमार सिंह द्वारा बताया गया कि ट्रक में केबिन के पीछे बने एक विशेष प्रकार के बॉक्स में अवैध गांजा लदा हुआ है । पुलिस टीम द्वारा ट्रक की तलाशी ली गयी तो बॉक्स में रखा हुआ कुल 02 कुंतल 85 किग्रा अवैध गांजा बरामद हुआ । उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना ड्रमण्डगंज पर मु0अ0सं0-43/2023 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट व 207 एमवी एक्ट पंजीकृत कर गिरफ्तार अभियुक्तों के विरूद्ध नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुए मा0न्यायालय/जेल भेजा जा रहा है तथा गांजा तस्करी में प्रयुक्त ट्रक वाहन संख्याः JH16A3965 और रेकी में प्रयुक्त कार वाहन संख्याः UP70FK6130को सीज किया गया। पकड़े गये अभियुक्तों द्वारा पूछताछ में बताया गया कि वह उड़ीसा प्रान्त से ट्रक में केबिन के पीछे बनाये गये एक विशेष प्रकार के बॉक्स में गांजा छिपाकर लाते है जिसे उड़ीसा से प्रयागराज लाते समय कार चालक संदीप कुमार सिंह द्वारा अपनी कार से रास्ते में ट्रक के आगे-आगे चलकर रेकी की जाती है ताकि पकड़े न जायें । गिरफ्तार अभियुक्त आशीष कुमार पाण्डेय द्वारा गांजा को प्रयागराज ले जाकर अपने घर में रखकर आसपास के जनपदों में सप्लाई की जाती हैं।

एमएलसी विशाल सिंह चंचल ने मुख्यमंत्री से दिलवाए 11 पीड़ितों को आर्थिक सहायता

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गाजीपुर के लोकप्रिय एमएलसी विशाल सिंह चंचल के आग्रह पर मुख्यमंत्री आदित्य योगी ने गाजीपुर के 11 पीड़ित परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान किये हैं। इस माह में ये दूसरा मौका है मुख्यमंत्री ने पहले 07 पीड़ित परिवारों तथा अब फिर 11 पीड़ित परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की है। बताते चले कि मुख्यमंत्री जून महीने में तीन बार वाराणसी दौरे पर आ चुके हैं। 11जून,17 जून और 26 जून। सभी दौरों पर एमएलसी विशाल सिंह चंचल कदम से कदम मिला के चलते दिखे तो वहीं अभी हाल ही में एमएलसी सपरिवार आशीर्वाद भी प्राप्त किये । ऐसा ही मौका कल का था जब मुख्यमंत्री पुलिस लाइन हेलिपैड पर उतरे और बाबा विश्वनाथ और बाबा कालभैरव के दर्शन के लिए रवाना हो गए। हेलिपैड से लेकर दर्शन पूजन तक एमएलसी सूबे के मुखिया के साथ साये की तरह दिखे। इसी बीच वार्ता हुई और प्रमुख सचिव चिकित्सकीय सहायता प्रदान कर दिए। एमएलसी विशाल सिंह चंचल जी ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी पीड़ितों के जल्द ही स्वस्थ होने की कामना की है। गाजीपुर की सातों विधानसभाओं से आये इन सभी पीड़ित परिवारो ने मुख्यमंत्री और एमएलसी विशाल सिंह चंचल के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया है। पीड़ितों में पहाड़पुर खुर्द की कृतिका कुमारी को 53 हजार125, विशम्भरपुर सानी की सविता को 2 लाख, हुर्मुजपुर के साजन चौहान को 1लाख, सोनबरसा की अनन्या कुमारी को 1 लाख, बहरियाबाद के मूलचंद

को 2 लाख 50 हजार, सुकुलपुरा की सुशीला को 2 लाख 50 हजार,सिकंदरपुर की तबस्सुम खातून को 2 लाख 50 हजार, दुल्लहपुर की आरती यादव को 75 हजार, खजुरगाँव के योगेंद्र चौहान को 1लाख 80 हजार, सिंगेरा के सतवंत सिंह को 1लाख 75 हजार, खड़वाडीह की मंजू को 1लाख की आर्थिक सहायता प्रदान की गई हैं।एमएलसी चंचल ने सभी के जल्द ही स्वस्थ होने की कामना की है।

संक्षिप्त खबरें

ईद उल अजहा की खरीदारी से बाजार में उमड़ी भीड़

कॉस्मेटिक, रेडीमेड और किराना की दुकानों पर ग्राहकों का तांता

मोहम्मद अरशद

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। ईद-उल-अजहा त्योहार के मौके पर मंगलवार को खरीदारों से बाजार पट गया है। रेडीमेड, कॉस्मेटिक, किराना और मेहंदी रचाने वाली दुकानों पर पर्दानशीं औरतों की भीड़ इस कदर उमड़ी है की देखते बन रहा। खेतासराय कस्बा और शाहगंज इलाके में भारी भीड़ देखी जा रही है। महिला पुरुष सभी अपनी अपनी जरूरत के सामानों की खरीदारी करते नजर आ रहे हैं। कुबार्नी के इस त्योहार के मद्देनजर बकरों व बड़े जानवरों का बाजार भी सज गया है। शाम होते ही बाजार में अकीदतमंद उमड़ने लगे हैं। पिछली बार की अपेक्षा इस वर्ष हर छोटे-बड़े खाद्य पदार्थ व अन्य सामानों के दामों में काफी कुछ वृद्धि हुई है लेकिन लोग सेवई काफी पसंद कर रहे हैं। नमाज अदा करने के बाद बकरे की कुबार्नी दी जाएगी। ईद-उल-अजहा (बकरीद) के दो दिन पहले से ही बाजार में जबरदस्त रौनक है। मुस्लिम समाज के लोग जमकर खरीदारी कर रहे हैं। रेडिमेड, जूते-चप्पल, कपड़े, दर्जी, मेहंदी, गिफ्ट पैक आदि दुकानों पर खरीदारों की भीड़ लगी है। देर शाम तक लोगों ने खरीदारी की। इनमें महिलाओं व बच्चों की संख्या अधिक रही। ईद-उल-अजहा गुरुवार को मनाया जाएगा। पर्व को लेकर साज सज्जा के सामान के लिए युवतियों में विशेष उत्साह देखा गया, जो कि दुकानों पर पहुंचकर देर शाम तक खरीदारी करती रहीं। हालांकि, बकरीद के लिए नए कपडे. खरीदने की होड़ युवाओं से लेकर बच्चों तक में देखी गई। इसके अलावा लोगों ने त्यौहार को लेकर पकवान बनाने के सामान की भी खूब खरीदारी की।

कुबार्नी के लिए बकरों की खरीदारी खूब- ईद-उल-अजहा पर कुबार्नी के लिए बकरों के बाजार सज गए हैं। नगर सहित अन्य जगहों पर मंडी सजी। हालांकि, लोगों ने कई दिन पहले से बकरों की खरीदारी शुरू कर दी थी। एक दिन पहले भी जमकर बकरों की खरीदारी हुई। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार इस त्योहार पर सक्षम लोग अपनी हैसियत के मुताबिक पशुओं की कुबार्नी देते हैं, जिनमें प्रमुख रूप बकरे की कुबार्नी शामिल है।

पीएम मोदी ने भोपाल से पूरे देश के कार्यकर्ताओं को बूथ विजय संकल्प अभियान की शपथ दिलाई

प्रखर रामनगर वाराणसी। भारतीय जनता पार्टी मंडल रामनगर ने मंडल अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में बूथों पर एवं मंडल की टीम किड्जी विद्यालय में मेरा बूथ सबसे मजबूत कार्यक्रम वर्चुअल संबोधन के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सेवा,सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित स्वर्णिम कार्यकाल के 9 साल पूर्ण होने पर छएऊ के माध्यम से वाराणसी लोकसभा के मेरा बूथ सबसे मजबूत के अंतर्गत माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भोपाल से पूरे देश के कार्यकर्ताओं को बूथ विजय संकल्प अभियान की शपथ दिलाई।भाजपा मंडल रामनगर में हो रहे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधान परिषद सदस्य स्नातक श्री केदार नाथ सिंह के साथ मंडल प्रभारी एवं महानगर उपाध्यक्ष श्री मधुकर चित्रांश जी के उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कांटों में प्रमुख रूप से महानगर मंत्री डॉ अनुपम गुप्ता मंडल अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह नंद लाल चौहान शैलेन्द्र किशोर पांडेय सर्वेंद्र विक्रम सिंह सुरेश बहादुर सिंह अशोक जायसवाल जितेंद्र पांडेय राजकुमार सिंह राजेंद्र शंकर पटेल मोनिका यादव मनोज यादव विनोद पटेल धीरेंद्र प्रताप सिंह राजकुमार यादव संजय बाल्मीकि भूपेंद्र साहू मंजू देवी अर्चना सिंह अंकित राय विकास बघेल दुर्गा साहनी अन्नपूर्णा मौर्या निक्की सिंह पंकज बारी शीतल प्रजापति राहुल कुमार प्रमुख रूप से रहे।

रोटरी क्लब प्रेसिडेंट रोटेरियन डॉ अजय दूबे रोटरी उदय को उत्कृष्ट सामाजिक कार्यो हेतु अलग - अलग श्रेणी में 21 अवॉर्ड से किया गया सम्मानित

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रो. अनिल अग्रवाल द्वारा क्लब प्रेसिडेंट रोटेरियन डॉ अजय दूबे रोटरी उदय को उत्कृष्ट सामाजिक कार्यो हेतु अलग - अलग श्रेणी में कुल 21 अवॉर्ड से सम्मानित किया गया` 90 से ज्यादा क्लब और 450 से ज्यादा रोटेरियन की उपस्थिति में प्रयागराज स्थिति होटल कान्हा श्याम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रेसिडेंट रो. डॉ अजय दूबे के साथ सचिव रो. गौरव त्रिपाठी, रो. अमित सिंह,रो. सचिन मिश्रा, रो. विजय त्रिपाठी, रो. सुजीत अधिकारी, रो. ऋषभ राज सिंह उपस्थित थे।

थाने पर हमला के मामले में दो अभियुक्त तथा पांच अभियुक्ता गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक महोदय गाजीपुर के आदेश के क्रम में अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ विरूध्द चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल निर्देशन में व क्षेत्राधिकारी मुहम्मदाबाद के निकट पर्वेक्षण मंगलवार को थानाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह यादव मय हमराह द्वारा मुख्तार अंसारी के सूटर रहे अमित राय की गिरफ्तारी के विरोध में अमित राय के पिता की अगुवाई में लोगों ने थाने पर हमला बोल दिया था जो हमें जरा को छोड़े जाने की मांग कर रहे थे इस दौरान भीड़ ने कुछ पुलिसकर्मियों को चोटिल भी किया था इस मामले को संज्ञान में लेते हुए पुलिस ने 7 लोगों को नामजद करते हुए लगभग 150 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था वही इस मामले में

पुलिस ने कार्यवाही करते हुए 02 अभियुक्त को करीमुद्दीनपुर चट्टी जोगामुसाहिब मोड़ से व 05 अभियुक्ता को पंचायत भवन के समाने ग्राम जोगामुसाहिब से गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह ने बताया कि 23 जून की रात में करीमुद्दीन पर थाने और हमला करने के मामले में शातिर अपराधी प्रशांत राय के साथ रितेश बिन देवंती देवी पूनम चिंता लीलावती और दुनिया को गिरफ्तार किया गया है अन्य आरोपियों की तलाश अभी की जा रही है। गिरफ्तार करने वाले पुलिस टीम में थानाध्क्षय देवेन्द्र सिंह यादव, उप निरीक्षक सुरेश कुमार मौर्य, हेड कांस्टेबल विनोद यादव शामिल रहे।

भाजपा मंडल महामंत्री की कैंसर की बीमारी से निधन

प्रखर पिंडरा वाराणसी। पिंडरा विस् क्षेत्र के कठिराव मण्डल के महामंत्री व दबेथुवा निवासी 50 वर्षीय अनिल सिंह की कैंसर की बीमारी के चलते मंगलवार की सुबह निधन हो गया। बताते हैं कि भाजपा के जुझारू कार्यकर्ता के रूप में जाने वाले अनिल सिंह कैंसर की बीमारी से लंबे समय से जूझ रहे थे। उनका इलाज महामना कैंसर अस्पताल बीएचयू में इलाज चल रहा था। मंगलवार की सुबह निधन और दोपहर में शव घर पहुचने पर भाजपा कार्यकताओं और ग्रामीणों की भीड़ लग गई। शोक व्यक्त करने वाले में सांसद वीपी सरोज, विधायक डॉ अवधेश सिंह, जिला पंचायत सदस्य सुशील सिंह, मंडल अध्यक्ष अजय पटेल, मनीष पाठक, संदीप सिंह, शैलेश मिश्रा, पवन सिंह, फौजदार शर्मा, दिलीप सिंह, संतोष सिंह, दिनेश सिंह व अतुल रावत समेत अनेक लोग पहुँचे और उनकी शवयात्रा में भी शामिल हुए।

रजिस्ट्री कार्यालय के स्थानांतरण के विरोध में न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे अधिवक्ता

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मंगलवार को सिविल बार संघ गाजीपुर के सभी अधिवक्तागण निबन्धन कार्यालय के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में सभा हुई जिसमें सर्वसम्मत से प्रस्ताव पास किया गया । दिनांक 28 जून 2023 को सभी अधिवक्तागण न्यायिक कार्य से विरत रहेगें इसलिए स्टैम्प वेन्डरो से अनुरोध है कि रजिस्ट्री के लिए कोई भी स्टैम्प विक्रय न करें व हड़ताल में सहयोग करें । साथ ही जुलूस की शकल में पूरे कचहरी परिसर नारे लगाते हुए चक्रमण किया गया तथा प्रस्ताव पारित किया गया कि तीनों बार के सदस्य संयुक्त रूप से न्यायिक कार्य से 28 जून दिन बुधवार को पूर्ण दिवस न्यायिक कार्य विरत रहेंगे और सभी अधिवक्त से अपेक्षा है की अपने न्यायिक अधिकारीगण को सहयोग करने की दिशा निर्देश देने की कृपा करें।

परीक्षा में सेंधामारी करने वाले 2 शातिर अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से मास्टर कार्ड व ब्लूटूथ डिवाइस बरामद

प्रखर मिजार्पुर। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग, लखनऊ द्वारा शासन से अनुमति के उपरान्त ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी (स0क0) एवं समाज कल्याण पर्यवेक्षक (सामान्य चयन) प्रतियोगितात्मक परीक्षा-2018 पुनर्परीक्षा दिनांकः 26 व 27 जून, 2023 को आयोजित की गयी। जिसके परिप्रेक्ष्य में पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा के निर्देशन में उक्त भर्ती परीक्षा को सकुशल सम्पन्न करायें जाने हेतु जनपद में बनायें गए विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटी लगायी गई हैं। दिनांकः26 जून 2023 को उपरोक्त परीक्षा के दौरान आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज मीरजापुर में प्रथम पाली में परीक्षा दे रहे गौतम यादव पुत्र सभाजीत यादव निवासी अहमलपुर थाना जफराबाद जनपद जौनपुर को परीक्षा कक्ष में अनुचित साधन मास्टर कार्ड एवं ब्लूटूथ का प्रयोग कर परीक्षा में सेंधमारी करते हुए पकड़ा गया। जिसके सम्बन्ध में केन्द्राध्यक्ष आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज मीरजापुर-रीता वर्मा की तहरीर के आधार पर थाना को0शहर पर मु0अ0सं0-67/2023 धारा 3/9 उ0प्र0 सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम व 66ए आईटी एक्ट पंजीकृत किया गया। दिनांकः26 जून 2023 को उपरोक्त परीक्षा के दौरान बी.एल.जे. इण्टर कॉलेज मीरजापुर में द्वितीय पाली में परीक्षा दे रहे नवीन कुमार पुत्र उमेश सिंह निवासी उमराह पटना बिहार को परीक्षा कक्ष में अन्य अभ्यर्थी अजीत कुमार पुत्र केशव प्रसाद के स्थान परीक्षा देते समय बायोमैट्रिक वैरिफिकेशन के दौरान पकड़ा गया। जिसके सम्बन्ध में केन्द्राध्यक्ष बी.एल.जे.इण्टर कॉलेज मीरजापुर-बंशीधर तिवारी की तहरीर के आधार पर थाना को0 शहर पर मु0अ0सं0-68/2023 धारा 419, 420 भादवि व 3/4 उ0प्र0 सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम पंजीकृत किया गया। उपरोक्त गिरफ्तार अभियुक्तों के विरूद्ध नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

दवा विक्रेता समिति व औषधि निरीक्षक ने नशा उन्मूलन के तहत जागरूकता अभियान चलाया

प्रखर मिजार्पुर। शहर के भरूहना स्थित एक विद्यालय में दवा विक्रेता समिति मिजार्पुर के सदस्यों की एक बैठक 26 जून को बुलाई गई जिसमें जिले के औषधि निरीक्षक कुमार सौमित्र मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे। आज की बैठक का उद्देश्य नशा उन्मूलन एवं युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए उनमें जागरूकता पैदा करना था। बैठक में नशा के दुष्प्रभाव पर विचार ब्यक्त किया गया और प्रण किया गया कि हम सभी दवा दुकानदार सरकार द्वारा निर्धारित नियम और कानून से ही नारकोटिक औषधियो की बिक्री करेंगे ।कार्यक्रम के दौरान औषधि निरीक्षक कुमार सौमित्र ने सभी उपस्थित दवा विक्रेताओं एवं अन्य अतिथियों से नशा से दूर रहने के लिए शपथ ग्रहण करवाया। बैठक में प्रमुख रूप से दवा विक्रेता समिति के जिला अध्यक्ष प्रमोद कुमार द्विवेदी,जिला महामंत्री पंकज केशरी सचिव संजय कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष उमाशंकर केसरवानी, उपसचिव संजय ठाकुर, अजय कुमार अग्रवाल, जंय प्रकाश सेठ , अंशु दुबे, लखन अग्रवाल , विनीत गुप्ता, राजेश गुप्ता , नरूउल्ला खान, धर्मेंद्र गुप्ता, धीरज साहू सहित भारी संख्या में दवा विक्रेता मौजूद रहे। बैठक में अमित कुमार पाण्डेय को ऐसी बैठक के लिए स्थान उपलब्ध कराने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

औषधि निरीक्षक के नेतृत्व में नशा के खिलाफ सड़क पर जागरण यात्रा निकाली :- ड्रग इंस्पेक्टर कुमार सौमित्र ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो दवा इलाज के लिए बनाई गई थी उसे नशे के आदी लोग नशा करने में इस्तेमाल करने लगे है समाज मे दवा दुकानदारो के प्रति नकारात्मक माहौल बन रहा है जिसे दूर करने के लिए हम सबको मिल कर आगे आना होगा और प्रण करना होगा कि हम किसी नाबालिग के हाथ या बिना पर्चे के नारकोटिक दवा नही बेचेंगे। दवा विक्रेता समिति के लोग सबके साथ भरुहना रोड पर नशा के खिलाफ जागरण यात्रा निकाली।

क्षतिग्रस्त पानी की टंकी बदलने की मांग को लेकर ग्रामीणों का प्रदर्शन

प्रखर मिजार्पुर। पीने के पानी की किल्लत को लेकर विकास खण्ड-जमालपुर में ग्राम सभा-भोकरौध के ग्रामीणों द्वारा मौके पर ही क्षतिग्रस्त टंकी बदलने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया गया।बता दें कि विकास खण्ड-जमालपुर के दक्षिणी छोर पर जनपद-चंदौली सीमा से सटे पहाड़ के किनारे बसे ग्राम सभा-भोकरौध के इस बस्ती का वाटर-लेवल पहले से ही काफी नीचे है,यहां पर निजी हैण्ड पम्प आदि द्वारा पेयजल की व्यवस्था करना आम आदमी के बस की बात नहीं है।कुछ संपन्न लोगों को छोड़ दें तो यहां के ज्यादातर लोग पेयजल के लिए शासन द्वारा उपलब्ध कराए गए व्यवस्था पर ही निर्भर है।हर साल गर्मी के दिनों में पेयजल की समस्या को देखते हुए २०१४-१५ में उस समय के तत्कालीन विधायक श्री ललितेशपति त्रिपाठी जी के प्रयास से उतर प्रदेश जल निगम द्वारा पेयजल हेतु सोलर पंप का स्थापना किया गया,जिसके तहत एक ५००० लीटर का पानी टंकी तथा पाइप लाइन डालकर चार पानी की टोटी दो प्वाइंट हरिजन बस्ती व दो प्वाइंट मौर्या बस्ती में लगाया गया,जिससे गांव वालों के लिए पेयजल का स्थायी समाधान हो गया था।लेकिन पिछले तीन-चार सालों से पानी की टंकी लीक हो जाने के कारण पानी की सप्लाई पूर्णतया बंद हो गया है।मरम्मत के लिए ग्रामीणों द्वारा अपने स्तर पर काफी प्रयास भी किया गया लेकिन सफलता नहीं मिली। संबंधित विभाग को भी अवगत कराया गया लेकिन विभाग द्वारा भी इस पर ध्यान नहीं दिया गया।आज पेयजल के अभाव में यहां के लोग पांच-पांच सौ मीटर दूर से पानी ढोने के लिए मजबूर हैं।लिहाजा पिछले तीन-चार सालों से क्षतिग्रस्त हो चुके पानी की टंकी को बदलने तथा जर्जर हो चुके पाइप लाइन के मरम्मत की मांग को लेकर अन्न दाता मंच के संयोजक चौधरी रमेश सिंह सहित वहां के

ग्रामीणों द्वारा प्रर्दशन किया गया तथा उप जिलाधिकारी महोदय के नाम एक प्रार्थना पत्र भी लिखा गया।प्रर्दशन करने वालों में चौधरी रमेश सिंह,मुहम्मद जावेद,कल्लन देवी,अजय मौर्या,सुरेंद्र मौर्या,प्रीतम केशरी,आशीष मौर्या,आकाश मौर्या,पप्पू केशरी, राजेश केशरी,डॉ गुलाब शर्मा,बिंदु गोंड़,राजेश गोंड़,निजामुद्दीन,असगर,रशीद, हमीद,सद्दीक,जालंधर बिंद,बेचन राम,गुलाब, निरंजन, श्यामबोधन,कंचन,पंचम,कल्लू,जितेंद्र,रमेश प्रसाद आदि लोग मौजूद रहे।

कांग्रेस के प्रांतीय अध्यक्ष अजय राय ने स्वामी सहजानंद सरस्वती को दी श्रद्धांजलि

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ किसानों के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी स्वामी सहजानंद सरस्वती के पैतृक गांव देवा, दुल्लहपुर गाजीपुर पहुंचकर कांग्रेस के प्रांतीय अध्यक्ष व प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री अजय राय "विश्व कल्याणार्थ हो रहे महामृत्युंजय यज्ञ और पूजन" में शामिल होकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किए। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और स्वामी सहजानंद सरस्वती जी का जन्म गाजीपुर के दुल्लहपुर थाना क्षेत्र के देवा गांव में सन 12 फरवरी 1889 को हुआ था, आजादी की लड़ाई के साथ संगठित किसान आंदोलन के सूत्रधार स्वामी सहजानंद सरस्वती जी ने जमींदारी उन्मूलन के साथ किसानों के हित में कई आंदोलनों में हिस्सा लिया और उसका समाधान भी खोजा। किसान हितों के लिए लड़ते हुए स्वतंत्रता आंदोलन के सच्चे सिपाही स्वामी जी ने 26 जून 1950 को अंतिम सांस ली, उन्हीं की स्मृति दिवस पर विश्व कल्याणार्थ राष्ट्रीय महर्षि परिषद एवम उनके अनुयायियों व ग्राम वासियों द्वारा उनके पैतृक गांव देवा, दुल्लहपुर में महामृत्युंजय यज्ञ व वृहद पूजन के आयोजन में प्रांतीय अध्यक्ष अजय राय सम्मिलित हुए और श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उनके साथ जिलाध्यक्ष सुनील राम और दर्जनों कार्यकताओं ने भी स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर अजय राय ने विश्व कल्याण की ईश्वर से प्रार्थना की और स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आज 26 जून को स्वामी जी की पुण्य तिथि पर उनके पैतृक गांव आकर उन्हें श्रद्धासुमन देने का सौभाग्य मिला, इसके लिए राष्ट्रीय महर्षि परिषद द्वारा विश्व कल्याण के साथ स्वामी जी की श्रद्धांजलि देने का जो कार्यक्रम रखा गया है उसके लिए उन्हें साधुवाद है। वही जिलाध्यक्ष सुनील राम ने कहा कि स्वामी जी के आदर्शों पर ही आज राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी चल रही है और किसानों के साथ समाज के हर मजलूमों की लड़ाई लड़ रही है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से एआईसीसी सदस्य रविकांत राय, पीसीसी सदस्य प्रमिला देवी, आनंद राय, सुमन चौबे, मुन्ना सिंह ,दिव्यांशु पांडे, चंद्रिका सिंह,बृजेश राम, देवनारायण सिंह, सतीराम सिंह, विभूति राम, राजेश गुप्ता आदि सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

छात्र नेता दीपक उपाध्याय ने खराब पड़े आरओ मशीन के लिए डीएम को सौंपा पत्रक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गर्मी के दिनों में चिलचिलाती धूप एवं तापलहरी के दौरान सड़कों पर चलने वाले राहगीरों सहित स्कूली बच्चों को शुद्ध पेयजल से वंचित ना होना पड़े, इस उद्देश्य से पूर्व के वर्षों में लाखों के सरकारी बजट से नगर पालिका परिषद गाजीपुर द्वारा नगर के प्रमुख चौराहों सहित पूरे नगर में पेयजल आपूर्ति संयंत्र स्थापित कराए गए थे। परंतु उचित देख-रेख व सही ढंग से रख-रखाव न होने के कारण सारे के सारे मशीन खराब होकर बंद और बदहाल हालत में केवल चौराहे और सड़कों की शोभा बढ़ा रहे हैं। प्यासे राहगीरों की मदद के नाम पर लगे इन मशीनों का कोई मतलब नहीं रह गया है। इसी समस्या को लेकर आज युवा समाजसेवी पूर्व छात्रसंघ उपाध्यक्ष दीपक उपाध्याय के नेतृत्व में नगर वासियों ने जिलाधिकारी आर्यका अखौरी से वार्ता कर पत्रक सौंपा। जिस पर समाजसेवी दीपक उपाध्याय ने बताया कि प्रमुख चौराहों व मंदिरों के पास आर. ओ.वाटर उपकरण लगा तो है परंतु नगरपालिका की घोर लापरवाही के कारण लाखों की लागत से लगे उपकरण की स्थिति खराब पड़ी हैं। आम जनता को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है इन्हीं मशीनों की मरम्मत कर जनहित में सुचारू रूप से चालू कराने की मांग को लेकर जिलाधिकारी आर्यका अखौरी से वार्ता कर समस्या का समाधान जल्द से जल्द कराने का आग्रह किया है। जिलाधिकारी द्वारा अधिशासी अधिकारी को इस समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया है, पत्र सौंपने वालों में छात्रनेता अभिषेक गौण, राजू पाण्डेय, विशाल विश्वकर्मा,प्रिन्स प्रजापति,अमन दुबे, संदीप यादव, शैलेश यादव,अविनिश सिंह,शिवम पाल इत्यादि मौजूद थे।

'आदिपुरुष' ने वर्ल्डवाइड की कमाई

450 करोड़

मुंबई (वार्ता)। दक्षिण भारतीय स्टार प्रभास की फिल्म आदिपुरुष ने वर्ल्डवाइड 450 करोड़ की कमाई कर ली है। भूषण कुमार निर्मित और ओम राउत निर्देशित आदिपुरुष में प्रभास, सैफ अली खान, कृति सैनन, देवदत्त गजानन नागे, सोनल चौहान, वत्सल सेठ आदि प्रमुख भूमिका में हैं। इस फिल्म में प्रभास भगवान राम, कृति माता सीता, सैफ अली खान लंकेश और सनी सिंह लक्ष्मण के किरदार में हैं। फिल्म आदिपुरुष 16 जून को रिलीज हुई है। फिल्म 'आदिपुरुष' को लेकर विवाद लगातार बढ़ता जा रहा है। कई कलाकारों ने भी फिल्म के प्रति अपनी निराशा व्यक्त की है। फिल्म आदिपुरुष के डायलॉग्स को लेकर विवाद हुआ, हालांकि बाद में डायलॉग्स में बदलाव किए गए। फिल्म आदिपुरुष को वर्ल्डवाइड करीब 10000 हजार स्क्रीन्स पर रिलीज किया गया था। 'आदिपुरुष' वर्ल्डवाइड काफी अच्छा बिजनेस कर रही है। आदिपुरुष ने वर्ल्डवाइड 450 करोड़ की कमाई कर ली है।

अपने जादुई संगीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया

आर.डी. बर्मन ने

मुंबई (वार्ता)। आर.डी.बर्मन को एक ऐसे संगीतकार के तौर पर याद किया जाता है जिन्होंने अपने जादुई संगीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। आर.डी बर्मन का जन्म 27 जून 1939 को कलकत्ता (अब कोलकाता) में हुआ था। उनके पिता एस.डी.बर्मन जाने माने फिल्मी संगीतकार थे। घर में फिल्मी माहौल के कारण उनका भी रूझान संगीत की ओर हो गया और वह अपने पिता से संगीत की शिक्षा लेने लगे। उन्होंने उस्ताद अली अकबर खान से सरोद वादन की भी शिक्षा ली। फिल्म जगत में पंचम दा के नाम से मशहूर आर.डी.बर्मन को यह नाम तब मिला जब उन्होंने अभिनेता अशोक कुमार को संगीत के पांच सुर सा.रे.गा.मा.पा गाकर सुनाया।

नौ साल की उम्र में बनाई पहली धुन

नौ वर्ष की छोटी सी उम्र में पंचम दा ने अपनी पहली धुन 'ए मेरी टोपी पलट के आ' बनाई और बाद में उनके पिता सचिन देव बर्मन ने उसका इस्तेमाल वर्ष 1956 में प्रदर्शित फिल्म 'फंटूश' में किया। इसके अलावा उनकी बनाई धुन 'सर जो तेरा चकराये' भी गुरूदत्त की फिल्म 'प्यासा' के लिए इस्तेमाल की गई। अपने सिने करियर की शुरूआत आर.डी.बर्मन ने अपने पिता के साथ बतौर संगीतकार सहायक के रूप में की। इन फिल्मों में 'चलती का नाम गाड़ी' 1958 और 'कागज के फूल' 1959 जैसी सुपरहिट फिल्में भी शामिल है। बतौर संगीतकार उन्होंने अपने सिने करियर की शुरूआत वर्ष 1961 में महमूद की निर्मित फिल्म 'छोटे नवाब' से की लेकिन इस फिल्म के जरिए वह कुछ खास पहचान नहीं बना पाए। इस बीच पिता के साथ आर.डी.बर्मन ने बतौर संगीतकार सहायक उन्होंने बंदिनी (1963), 'तीन देवियां' (1965) और 'गाइड' जैसी फिल्मों के लिए भी संगीत दिया। वर्ष 1965 में प्रदर्शित फिल्म 'भूत बंगला' से बतौर संगीतकार पंचम दा कुछ हद तक फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने में सफल हो गए। इस फिल्म का गाना 'आओ ट्विस्ट करें' श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुआ।

- 1975 में 'शोले' के गाने 'महबूबा महबूबा' गाकर पंचम दा ने अपना एक अलग समां बांधा जबकि 'आंधी', 'दीवार', 'खूशबू' जैसी कई फिल्मों में उनके संगीत का जादू श्रोताओं के सिर चढ़कर बोला
- हिन्दी फिल्मों के अलावा बंगला, तेलुगू, तमिल, उड़िया और मराठी फिल्मों में भी संगीत दिया

संघर्ष के दिन

अपने वजूद को तलाशते आर.डी.बर्मन को लगभग दस वर्षो तक फिल्म इंडस्ट्री मे संघर्ष करना पड़ा। वर्ष 1966 में प्रदर्शित निर्माता निर्देशक नासिर हुसैन की फिल्म 'तीसरी मंजिल' के सुपरहिट गाने 'आजा आजा मैं हूं प्यार तेरा' और 'ओ हसीना जुलफों वाली' जैसे सदाबहार गानों के जरिए वह बतौर संगीतकार शोहरत की बुलंदियों पर जा पहुंचे। वर्ष 1972 पंचम दा के सिने करियर का अहम पड़ाव साबित हुआ। इस वर्ष उनकी 'सीता और गीता', 'मेरे जीवन साथी', 'बाम्बे टू गोवा', 'परिचय' और 'जवानी दीवानी' जैसी कई फिल्मों में उनका संगीत छाया रहा। वर्ष 1975 में रमेश सिप्पी की सुपरहिट फिल्म 'शोले' के गाने 'महबूबा महबूबा' गाकर पंचम दा ने अपना एक अलग समां बांधा जबकि 'आंधी', 'दीवार', 'खूशबू' जैसी कई फिल्मों में उनके संगीत का जादू श्रोताओं के सर चढ़कर बोला।

एक ऐसी आवाज की तलाश रहती थी जो उनके संगीत में रच बस जाए। यह आवाज उन्हें पार्श्वगायिका आशा भोंसले में मिली। लंबी अवधि तक एक दूसरे का गीत संगीत में साथ निभाते-निभाते अन्तत दोनों जीवन भर के लिए एक दूसरे के हो लिए और अपने सुपरहिट गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते रहे। वर्ष 1985 में प्रदर्शित फिल्म 'सागर' की असफलता के बाद निर्माता निर्देशकों ने उनसे मुंह मोड़ लिया। इसके साथ ही उनको दूसरा झटका तब लगा जब निर्माता निर्देशक सुभाष घई ने फिल्म 'रामलखन' में उनके स्थान पर संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल को साइन कर लिया। इसके बाद हालांकि 'इजाजत', 'लिबास', 'परिंदा', '1942 ए लव स्टोरी' में उनका संगीत काफी पसंद किया गया।

संगीत निर्देशन के अलावा पंचम दा ने कई फिल्मों के लिए अपनी आवाज भी दी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आर.डी.बर्मन ने संगीत निर्देशन और गायन के अलावा 'भूत बंगला' (1965) और 'प्यार का मौसम' (1969) जैसी फिल्मों में अपने अभिनय से भी दर्शकों को अपना दीवाना बनाया।

सुदीप्तो सेन की अगली फिल्म होगी 'बस्तर'

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड निर्देशक सुदीप्तो सेन द केरल स्टोरी की सफलता के बाद अब फिल्म बस्तर बनाने जा रहे हैं। फिल्म द केरल स्टोरी में अदा शर्मा ने लीड रोल प्ले किया है। इस फिल्म का निर्देशन सुदीप्तो सेन ने किया है जबकि निर्माण विपुल अमृतलाल शाह ने किया है। केरल में लड़कियों के धर्मांतरण, उन पर ज्यादती और फिर आतंकी संगठन की कहानी पर बनी 'द केरल स्टोरी' की सफलता के बाद सुदीप्तो सेन अब फिल्म बस्तर बनाने जा रहे हैं। 'द केरल स्टोरी'

की निर्माता विपुल अमृतलाल शाह और सुदीप्तो सेन की जोड़ी फिल्म बस्तर के जरिए फिर से साथ आ रही है। निर्माताओं ने एक अनाउंसमेंट पोस्टर के साथ अपने दूसरे सहयोग की घोषणा की जिसमें हम देख सकते हैं कि शांतिपूर्ण माहौल के बीच, फिल्म का टाइटल लाल रंग से रंगा हुआ दिखाई दे रहा है। कहा जा रहा है कि विपुल अमृतलाल शाह की आगामी फिल्म बस्तर एक और चौंकाने वाली और आंखें खोलने वाली फिल्म है, जो एक और सच्ची घटना से प्रेरित होगी।

सोनम कपूर

की 'ब्लाइंड' सात जुलाई को जियो सिनेमा पर

मुंबई (भाषा)। सोनम कपूर आहुजा अभिनीत फिल्म 'ब्लाइंड' सात जुलाई को ओटीटी मंच 'जियो सिनेमा' पर रिलीज होगी। सोनम इस फिल्म के साथ ओटीटी मंच अपनी नई पारी की शुरुआत कर रही हैं। यहां जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार फिल्म निर्माताओं ने कहा, किसी भी परिस्थिति का सामना करने और दृढ़ संकल्प की कहानी पर आधारित फिल्म 'ब्लाइंड' ओटीटी मंच पर सभी के लिए मुफ्त में उपलब्ध होगी। शोम मखिजा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में पूरब कोहली, विनय पाठक, लिलेट दुबे और शुभम सराफ भी अलग-अलग भूमिका में नजर आएंगे।

महाकालेश्वर मंदिर में आधार कार्ड से होंगे दर्शन

उज्जैन (वार्ता)। मध्यप्रदेश के उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में दिनों दिन बढ़ती दर्शनार्थियों की संख्या के कारण स्थानीय श्रद्धालुओं के लिए अब आगामी 11 जुलाई से आधार कार्ड से दर्शन की व्यवस्था की जाएगी। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि भगवान महाकालेश्वर मंदिर में देश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों की संख्या में लोग आते हैं। विशेषकर श्रावण माह में इनकी संख्या अत्यधिक होती है। इसे दृष्टिगत रखते हुए मंदिर प्रबंध समिति ने उज्जैन वासियों के लिए श्रावण मास में 11 जुलाई से बाबा महाकाल के दर्शन हेतु आधार कार्ड दिखाकर दर्शन सुगमता पूर्वक करने की व्यवस्था की है। साथ ही एक बार अपना आधार कार्ड दर्शन हेतु पंजीयन कराने पर बार-बार आधार कार्ड ले जाने की भी आवश्यकता नहीं होगी। ऐसी व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी। उज्जैन रहवासियों को बाबा महाकालेश्वर के दर्शन सुगमता पूर्वक हो सकें, इसके लिए मंदिर समिति को महापौर मुकेश टटवाल ने इस संबंध में प्रस्ताव दिया था।

जिमी में नजर आएंगे किच्चा जूनियर

मुंबई (वार्ता)। दक्षिण भारतीय अभिनेता किच्चा जूनियर उर्फ संचित संजीव फिल्म जिमी में नजर आएंगे। किच्चा जूनियर ने अपनी अगली एक्शन फिल्म जिमी की घोषणा की है। जिमी एक थ्रिलर फिल्म है। जिमी का निर्देशन

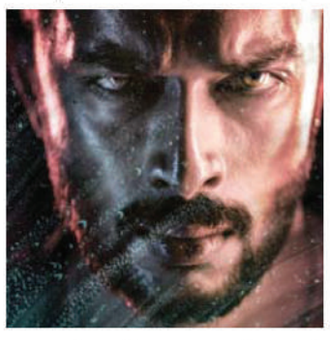

संचित संजीव उर्फ किच्चा जूनियर ने किया है। वह फिल्म में मुख्य भूमिका में भी हैं। जिमी का निर्माण जी मनोहरन, प्रिया सुदीप और केपी श्रीकांत द्वारा किया गया है, और लहरी फिल्म्स, वीनस एंटरटेनर्स और सुप्रियाणवी पिश्रर स्टूडियो के बैनर तले नवीन मनोहरन द्वारा सह-निर्मित है। फिल्म जिमी की रिलीज डेट जल्द ही घोषित की जाएगी।

गाना 'अंत सफल होई जाएगा' रिलीज

मुंबई (वार्ता)। भोजपुरी सिनेमा के जानेमाने अभिनेता यश कुमार की फिल्म 'लाखों में एक हमार भैया' का गाना 'अंत सफल होई जाएगा' आज रिलीज हो गया है। गाना अंत सफल होई जाएगा को यश कुमार ने कव्वाली के रूप में गाया है। यह गाना यश कुमार के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल यश कुमार एंटरटैनमेंट से रिलीज हुआ है। इस गाने के माध्यम से यश कुमार ने दुनिया को जिंदगी की हकीकत से रूबरू कराया है। यश कुमार ने इस गाने को लेकर कहा कि गाना 'अंत सफल होई जाएगा' हर किसी को सुनना चाहिए। इसमें

मनोरंजन के साथ - साथ एक सच को भी दर्शाता है। यह एक लोकगीत है। उन्होंने कहा कि जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है। बांकी सब मोह माया है। इस गाने को करते समय बेहद मजा आया। गौरतलब है कि यश कुमार के इस गाने का लिरिक्स राजेश मिश्रा ने तैयार किया है और म्यूजिक साजन मिश्रा का है।

'गदर 2' बनाने के लिए अनिल शर्मा ने 50 से अधिक कहानियों को किया रिजेक्ट

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड फिल्मकार अनिल शर्मा ने अपनी सुपरहिट फिल्म गदरः एक प्रेम कथा'का सीक्वल बनाने के लिए 50 से अधिक कहानियों को रिजेक्ट किया। अनिल शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म 'गदरः एक प्रेम कथा' वर्ष 2001 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में सनी देओल ,अमीष पटेल और अमरीश पुरी ने अहम भूमिका निभाई थी। 22 सालो के बाद गदर की सीक्वल 'गदर 2' रिलीज होने जा रही है। अनिल शर्मा ने बताया है कि गदर 2 को बनाने में उन्हें 22 साल कैसे लग गए। अनिल शर्मा ने बताया है कि 'गदर 2' के लिए उनके पास कई कहानियां आईं लेकिन इनमें से कोई भी ऐसी कहानी नहीं थी जो पहली वाली 'गदर' से मिल पाए। यही वजह थी उन्होंने फिल्म की 50 से अधिक कहानियों को रिजेक्ट किया। 'गदर 2:11 अगस्त को रिलीज होगी। इस फिल्म में सनी देओल के साथ अमीषा , उत्कर्ष शर्मा, मनीष वाधवा, सिमरत कौर, लव सिन्हा नजर आएंगे।

फराह खान निर्देशित फिल्म को प्रोड्यूस करेंगे शाहरुख

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान अपनी दोस्त और निर्देशक फराह खान की आने वाली फिल्म को प्रोडयूस कर सकते हैं। शाहरुख खान और फराह खान की दोस्ती इंडस्ट्री में सालों पुरानी है। फराह खान ने जब वर्ष 2004 में निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा तो उन्होंने अपने शाहरुख को अपनी पहली फिल्म 'मै हूं ना' में कास्ट किया था। इसके बाद फराह खान ने शाहरुख खान को वर्ष 2007 में प्रदर्शित फिल्म ओम शांति ओम और वर्ष 2014 में प्रदर्शित फिल्म हैप्पी न्यू ईयर मे निर्देशित किया। चर्चा है कि शाहरुख खान और फराह खान जल्द एक बार फिर एक साथ काम करने जा रहे हैं। शाहरुख ,फराह खान की नई मसाला फिल्म को प्रोड्यूस करने जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि यदि सब कुछ ठीक रहा, तो इस साल के अंत में इस फिल्म की घोषणा कर दी जाएगी और इसकी शूटिंग शुरू हो सकती है।

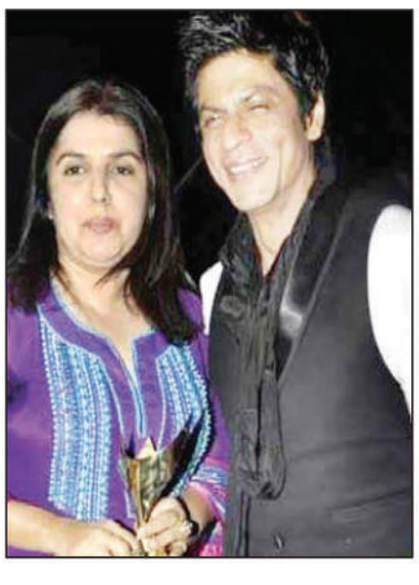

संक्षिप्त खबरें

बॉब की 60वीं शाखा

लखनऊ (वि.)। बैंक आफ बड़ौदा (बॉब) के लखनऊ अंचल की 60वीं शाखा, उत्तर प्रदेश पुलिस मुख्यालय में खोली गई जिसका उद्घाटन प्रदेश के पुलिस महानिदेशक विजय कुमार व बैंक आफ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक अजय कुमार खुराना ने किया। इस मौके पर लखनऊ के अंचल प्रमुख राजेश कुमार सिंह भी उपस्थित थे। बॉब तथा यूपी पुलिस के मध्य पुलिसकर्मियों के वेतन खाते तथा सेवानिवृत्त पुलिसकर्मियों के पेंशन खाते खोलने के लिए बड़ौदा पुलिस सैलरी पैकेज हेतु सहमति हुई थी। पैकेज के अंतर्गत सेवारत पुलिसकर्मियों के लिए 20 लाख तक के निःशुल्क जीवनबीमा कवर की सुविधा भी हैं। इसके अलावा व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवर व कई अन्य सुविधाएं भी हैं। इस अवसर पर पुलिस महानिदेशक ने कहा कि विषम परिस्थितियों में कार्य कर रहे पुलिस कर्मियों के लिए बड़ौदा पुलिस सैलरी पैकेज अत्यंत उपयोगी है। बैंक के ईडी अजय कुमार खुराना ने कहा कि पुलिसकर्मी देश और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

आडिट कराने का वादा

नई दिल्ली। बायजू ने अपने निवेशकों से वादा किया है कि वह वित्त वर्ष 2021-22 का आडिट सितम्बर तक और 2022-23 का आडिट दिसम्बर तक पूरा कर लेगी। मामले से परिचित सूत्रों ने यह जानकारी दी। गौरतलब है कि बायजू का आडिट लंबे समय से लंबित है। बायजू के सीईओ बायजू रवींद्रन ने शनिवार को शेयरधारकों के साथ एक बातचीत में अपनी पिछली गलतियों को स्वीकार किया और उन्हें भरोसा दिया कि आडिट को जल्द पूरा किया जाएगा। बातचीत के दौरान रवींद्रन ने बोर्ड सदस्यों के इस्तीफे की बात मानी, लेकिन कहा कि कंपनी ने अभी तक उन्हें स्वीकार नहीं किया है।

सेंसेक्स में हल्की गिरावट

मुंबई। घरेलू शेयर बाजारों में सोमवार को उतार-चढ़ाव के बीच मिला-जुला रुख रहा। वैश्विक बाजारों में कमजोर रुख के साथ बीएसई सेंसेक्स नौ अंकों की मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 9.37 अंक यानी 0.01 प्रतिशत की गिरावट के साथ 62,970 अंक पर बंद हुआ। यह लगातार तीसरा दिन है जब सेंसेक्स नुकसान में रहा। कारोबार के दौरान, यह ऊंचे में 63,136.09 और नीचे में 62,853.67 अंक तक आया। दूसरी तरफ, नेशनल स्टाक एक्सचेंज का सूचकांक निफ्टी 25.70 अंक यानी 0.14 प्रतिशत की बढ़त के साथ 18,691.20 अंक पर बंद हुआ।

नायका का नया प्रोडक्ट

नई दिल्ली। नायका कास्मेटिक्स ब्रांड द्वारा वर्ष 2018 में लांच मैट टू लास्ट लिक्विड लिपस्टिक को मिली अभूतपूर्व प्रक्रिया को देखते हुए, अब नायका अपनी नई मैट टू लास्ट फाउंडेशन रेंज की पेशकश के साथ देश में तहलका मचाने के लिए पूरी तरह तैयार है। कंपनी लिपिस्टिक के सुबह से लेकर शाम तक ज्यों की त्यों बने रहने का दावा करती है। सेबस्टाप से समृद्ध यह क्रांतिकारी फाउंडेशन 15 शेड्स में उपलब्ध हैं। महज़ 15 मिनट में पोर्स और फाइन लाइन्स के दिखाव को कम कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप त्वचा स्मूद बनती है।(एजेंसी)

एशिया प्रशांत क्षेत्र में सर्वाधिक होगी भारत की वृद्धि दर

■ एसएंडपी ने 6% पर बरकरार रखा अनुमान ■ मजबूत अर्थव्यवस्था के कारण नहीं किया बदलाव

नई दिल्ली (भाषा)।

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने सोमवार को भारत की जीडीपी वृद्धि दर छह प्रतिशत रहने का अनुमान बरकरार रखा। रेटिंग एजेंसी ने साथ ही कहा कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में भारत की वृद्धि दर सबसे अधिक होगी।

घरेलू अर्थव्यवस्था की मजबूती के कारण चालू वित्त वर्ष और अगले वित्त वर्ष के वृद्धि अनुमानों को अपरिवर्तित रखा गया है। पिछले वृद्धि अनुमान मार्च में घोषित किए गए थे। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने एशिया-प्रशांत के लिए अपनी तिमाही आर्थिक समीक्षा में कहा, 'हमारा अनुमान है कि भारत, वियतनाम और फिलीपींस की वृद्धि दर लगभग छह प्रतिशत रहेगी।'

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के मुख्य अर्थशास्त्री (एशिया-प्रशांत) लुइस कुइज ने कहा, 'मध्यम अवधि के लिए वृद्धि अनुमान अपेक्षाकृत ठोस बना हुआ है। एशिया की उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाएं 2026 तक हमारे वैश्विक वृद्धि परिदृश्य में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में बनी हुई है।'

एसएंडपी ने कहा कि चालू वित्त वर्ष में खुदरा मुद्रास्फीति 6.7 प्रतिशत से घटकर पांच प्रतिशत रहने का अनुमान है, और आरबीआई अगले साल की शुरुआत में ही ब्याज दरों में कटौती कर सकता है।

रेटिंग एजेंसी ने कहा कि सामान्य मानसून और कच्चे तेल की कीमतों में कमी के चलते मुद्रास्फीति नरम पड़ेगी। एसएंडपी ने 2023 के लिए चीन की वृद्धि दर का अनुमान 5.5 फीसदी से घटाकर 5.2 फीसदी कर दिया है।

वर्ष 2023-24 के लिए भारत का जीडीपी अनुमान

एजेंसी/बैंक	अनुमानित दर
रिजर्व बैंक	6.5%
मूडीज	6.5%
एडीबी	6.4%
आईएमएफ	6.4%
वर्ल्ड बैंक	6.3%
फिच	6.3%
मोर्गन स्टेनले	6.2%
एसएंडपी	6.0%
क्रिसिल	6.0%

प्रतिस्पर्धी बनने को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी अपनाएं उद्योग : गुर्जर

नई दिल्ली (भाषा)।

केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने सोमवार को उद्योग से वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए अपने कामकाज में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी अपनाने का आग्रह किया।

बिजली राज्यमंत्री ने यहां के बदरपुर में स्थित राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान (एनपीटीआई) में 'अत्याधुनिक औद्योगिक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र' के उद्घाटन के मौके पर यह बात कही। भारी उद्योग मंत्रालय में भी राज्यमंत्री का दायित्व संभाल रहे गुर्जर ने कहा, 'देश के विकास के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी जरूरी है।

देश में ₹10,000 करोड़ निवेश करेगा लुलु ग्रुप

■ अगले तीन साल में होगा यह निवेश ■ नोएडा में लगेगा फूड प्रोसेसिंग प्लांट

हैदराबाद (भाषा)।

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) स्थित लुलु समूह अगले तीन वर्षों के दौरान भारत में मौजूदा परियोजनाओं पर 10,000 करोड़ रुपए का निवेश करेगा।

लुलु समूह के चेयरमैन यूसुफ अली एमए ने सोमवार को यहां यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि समूह ने देश में 20,000 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य भारत में 50,000 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना है और अब तक उनके विभिन्न उद्यमों ने 22,000 से अधिक नौकरियां दी हैं।

यूसुफ अली ने यह भी कहा कि लुलु समूह ने अगले पांच वर्षों के दौरान तेलंगाना में डेस्टिनेशन शॉपिंग मॉल (3,000 करोड़ रुपए) सहित विभिन्न परियोजनाओं में लगभग 3,500 करोड़ रु पए का निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है। उन्होंने कहा, 'हमने किया है। हम इसे बढ़ाएंगे।'

यूसुफ अली ने आगामी परियोजनाओं में कुल निवेश के बारे में पूछने पर कहा, 'हमने अहमदाबाद में एक शापिंग माल का निर्माण शुरू कर दिया है। हम चेन्नई में एक और शापिंग माल बना रहे है। एक खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र नोएडा में और दूसरा तेलंगाना में स्थापित किया जा रहा है। इन सभी परियोजनाओं पर अगले तीन वर्षों में 10,000 करोड़ रु पए का निवेश होगा।' उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एनआरआई निवेश कानूनों को उदार बना दिया है और अब अनिवासी भारतीयों के निवेश को घरेलू निवेश माना जाता है।

अमेरिकी सेब पर सीमा शुल्क हटाने का असर किसानों पर नहीं

नई दिल्ली (भाषा)।

अमेरिकी सेब पर 20 प्रतिशत प्रतिशोधात्मक सीमा शुल्क हटाने के फैसले से भारतीय किसानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने सोमवार को यह बात कही। उन्होंने बताया कि अगर इसका कोई असर होता भी है, तो सरकार के पास उत्पादकों को समर्थन देने के लिए पर्याप्त नीतिगत गुंजाइश है।

वाणिज्य विभाग में अतिरिक्त सचिव पीयूष कुमार ने कहा कि भारत इस शुल्क को हटाकर कुछ भी 'ज्यादा' नहीं दे रहा है और ऐसा नहीं है कि 'हमने अमेरिकी सेबों के लिए अपने दरवाजे पूरी तरह खोल दिए है।' उन्होंने कहा कि वास्तव में यह भारत के लिए फायदे का सौदा है, क्योंकि इसके बदले अमेरिकी बाजार में घरेलू इस्पात और एल्यूमीनियम को बाजार पहुंच मिलेगी। इन उत्पादों का निर्यात 2018 में अमेरिका के उच्च शुल्क लगाने से प्रभावित हुआ था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हालिया अमेरिका यात्रा के दौरान दोनों देश विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के छह विवादों को खत्म करने और अमेरिका के उत्पादों पर प्रतिशोध स्वरूप लगाए गए शुल्कों को हटाने पर सहमत हुए थे।

आर्थिक सुस्ती की चपेट में हर पांचवां MSME

■ अमेरिका-यूरोप में प्रतिकूल हालात से आई यह सुस्ती

मुंबई (भाषा)।

देश के कुल निर्यात में लगभग 40 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाले छोटे उद्यमों को अमेरिका एवं यूरोपीय संघ जैसे विकसित देशों में आसन्न आर्थिक सुस्ती से प्रतिकूल हालात का सामना करना पड़ सकता है। एक रिपोर्ट में यह आशंका जताई गई है।

रेटिंग एजेंसी क्रिसिल की रिपोर्ट के मुताबिक देश के पांच में से एक एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम क्षेत्र) को चालू वित्त वर्ष में महामारी से पहले की तुलना में अधिक कार्यशील पूंजी की जरूरत पड़ेगी। अमेरिकी एवं यूरोपीय बाजारों की भारत के कुल निर्यात में एक-तिहाई हिस्सेदारी है। ऐसे में इन दोनों बाजारों में आर्थिक सुस्ती की स्थिति देखते हुए घरेलू एमएसएमई इकायों पर बोझ पड़ने की आशंका है। रिपोर्ट के मुताबिक, रत्न एवं आभूषण, निर्माण और रंग एवं रंगीन द्रव्य जैसे क्षेत्रों में सक्रिय छोटी इकाइयों को पहले से ही अधिक कार्यशील पूंजी की जरूरत पड़ रही है।

रेटिंग एजेंसी क्रिसिल की रिपोर्ट में दी गई जानकारी

इस अध्ययन में 69 क्षेत्रों और 147 संकुलों में सक्रिय एमएसएमई को शामिल किया गया है जिनका कुल राजस्व 63 लाख करोड़ रुपए है।

क्रिसिल के निदेशक पुशान शर्मा ने कहा कि निर्यात पर केंद्रित एमएसएमई इकाइयों, खासकर सूरत एवं अहमदाबाद में स्थित इकाइयों को कोविड महामारी से पहले की तुलना में इस वित्त वर्ष में अधिक कार्यशील पूंजी की जरूरत पड़ेगी। इस रिपोर्ट के मुताबिक, अहमदाबाद संकुल वाली इकाइयों को 20-25 दिनों के लिए कार्यशील पूंजी बढ़ानी पड़ सकती है जबकि हीरा प्रसंस्करण के लिए मशहूर सूरत संकुल के लिए यह जरूरत 35 दिनों तक जा सकती है।

दिल्ली एयरपोर्ट पर लगीं सेल्फ बैगेज ड्राप मशीनें

■ हवाईअड्डे का परिचालन करने वाली डायल ने लगाई हैं कुल चौदह मशीनें
■ इन चौदह मशीनों में से 12 मशीनें पूरी तरह हैं स्वचालित
■ शेष दो एसबीडी मशीनें हाइब्रिड श्रेणी की रखी गई हैं
■ इंदिरा गांधी हवाईअड्डे के टर्मिनल-3 पर लगाई गई हैं ये सभी मशीनें

नई दिल्ली।

जीएमआर एयरपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर की इकाई दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल) ने देश की राजधानी के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाई अड्डे के टर्मिनल-3 पर सेल्फ बैगेज ड्राप सुविधा शुरू करने का ऐलान किया है। गौरतलब है कि डायल ही इस हवाईअड्डे का संचालन एवं प्रबंधन करता है। यह जानकारी देते हुए डायल के सीईओ विदेह कुमार जयपुरियार ने कहा कि इस सुविधा से यात्रियों को काफी राहत मिलेगी। इस अभिनव यात्री अनुकूल पहल का उद्देश्य सामान ले जाने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना इस व्यवस्था पर यात्रियों की प्रतीक्षा अवधि को कम करना है। यह सुविधा यात्रियों के लिए प्रतीक्षा समय लगभग 15-20 मिनट और समग्र हवाईअड्डे के अनुभव को बेहतर बनाएगा।

उन्होंने बताया कि सेल्फ-बैगेज ड्राप सुविधा के तहत दो-चरण की प्रक्रिया है। यात्रियों को हवाईअड्डे पर सबसे पहले सेल्फ चेक इन कियोस्क के जरिए बोर्डिंग पास और बैगेज टैग को जेनरेट करना है और उसके बाद वे सेल्फ बैगेज ड्राप (एसबीडी) सुविधा के लिए लगाई गई मशीन पर जाकर बोर्डिंग पास को स्कैन करके अपने सामान को सेल्फ बैगेज ड्राप मशीन पर ड्राप कर सकते हैं। यात्रियों को इस मशीन पर यह भी भरना होगा कि उनका सामान निषिद्ध/खतरनाक वस्तुओं से मुक्त है। यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद यात्री का बैगेज स्वचालित रूप से छंटाई के बाद हवाई जहाज में स्थानांतरित हो जाएगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सुविधा का उपयोग करने के लिए यात्रियों को अलग से पंजीकरण कराने की आवश्यकता नही है। इस मशीन पर प्रति मिनट तीन यात्रियों की बैगेज प्रक्रिया पूरी की जा सकती है। इस सुविधा के लिए एयरपोर्ट पर कुल 14 मशीनें लगाई गई हैं। इन 14 मशीनों में 12 पूरी तरह स्वचालित हैं जबकि दो मशीनें हाइब्रिड तकनीक वाली हैं।

हैदराबाद हवाई अड्डे पर भी सेल्फ बैगेज ड्राप सुविधा

हैदराबाद (वार्ता)।

तेलंगाना के हैदराबाद में जीएमआर हैदराबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर प्रवेश द्वार संख्या नौ के पास सेल्फ-बैगेज ड्राप सुविधा की शुरुआत की गई है।

हवाई अड्डा सूत्रों के मुताबिक कुशल कार्यक्षमता और निर्बाध यात्रा के लिए, हवाई अड्डे पर आठ सेल्फ-बैगेज स्वचालित मशीनों की स्थापना की गई है। शुरुआत में इंडिगो एयरलाइंस से बैंगलोर और चेन्नई के यात्रियों को यह सेल्फ बैगेज ड्रॉप सुविधा प्रदान की गई है। इन मशीनों में स्कैनर, तराजू और सेंसर लगे हुए हैं जो इन्हें यात्रियों को 45-60 सेकंड में बैगेज चेक-इन की सुविधा प्रदान करने में सक्षम बनाते हैं।

'मेक इन इंडिया' का बोइंग ने किया समर्थन

वाशिंगटन (भाषा)।

बोइंग के सीईओ डेविड एल कैलहौन ने कहा कि उनकी कंपनी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'मेक इन इंडिया' पहल का समर्थन करती है। उन्होंने साथ ही जोड़ा कि कंपनी देश के वाणिज्यिक विमानन बाजार के तेजी से विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

कैलहौन ने 23 जून को वाशिंगटन डीसी में मोदी से मुलाकात की थी। इस दौरान दोनों ने भारत के विमानन क्षेत्र में बोइंग की व्यापक उपस्थिति पर चर्चा की, जिसमें विमानों का रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल (एमआरओ) शामिल है। प्रधानमंत्री ने बोइंग को भारत में अंतरिक्ष विनिर्माण क्षेत्र में निवेश के लिए भी आमंत्रित किया। कैलहौन ने रविवार को कहा, 'बोइंग को भारत के वाणिज्यिक विमानन बाजार के तेजी से विस्तार और रक्षा बलों के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने पर गर्व है।'

उन्होंने कहा, 'हम प्रधानमंत्री मोदी की 'मेक इन इंडिया' पहल का समर्थन करते है। भारत में 5,000 से अधिक लोग बोइंग टीम में नवोन्मेषी काम करके उच्च गुणवत्ता वाले करियर को अपना रहे हैं।'

कैलहौन ने कहा कि भारत में बोइंग का बढ़ता निवेश देश के साथ कंपनी की साझेदारी को दर्शाता है और साथ ही सकारात्मक अमेरिका-भारत आर्थिक संबंधों को भी रेखांकित करता है।

बीमारियों के इलाज में मददगार हो सकती है एआई

■ संक्रामक रोगों के प्रति आगाह करने में भी मददगार ■ क्लीनिकल परीक्षण में भी ले सकते हैं इसकी मदद

नई दिल्ली (भाषा)।

वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में मौजूद व्यवस्थागत चुनौतियों के समाधान में कृत्रिम मेधा (एआई) रोगों के निदान, संक्रामक रोगों के बारे में आगाह करने और क्लीनिकल परीक्षण के मामले में मददगार साबित हो सकती है। एक अध्ययन रिपोर्ट में यह कहा गया है।

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की सोमवार को जारी इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य सेवा में एआई की परिवर्तनकारी क्षमता और इसे वैश्विक स्तर पर अपनाने में सार्वजनिक-निजी सहयोग की अहमियत बताने के लिए भारत सहित कई देशों से जुड़े अध्ययनों का हवाला दिया गया है।

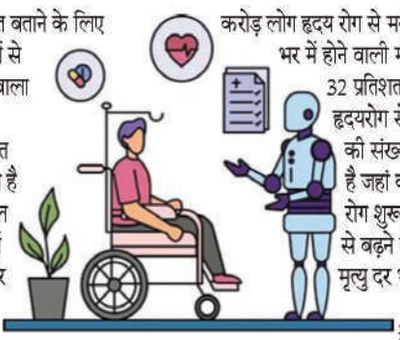

भारत से संबंधित अध्ययन में पाया गया है कि अपोलो अस्पताल हृदय से जुड़े जोखिमों के लिए बड़े पैमाने पर एआई का उपयोग कर स्थापित मानदंडों की तुलना में अधिक सटीक आकलन कर रहा है। हर साल लगभग 1.8 करोड़ लोग हृदय रोग से मरते है, जो दुनिया भर में होने वाली मौतों का करीब 32 प्रतिशत है। भारत में हृदयरोग से होने वाली मौतों की संख्या काफी अधिक है जहां कम उम्र में यह रोग शुरू होने और तेजी से बढ़ने के साथ उच्च मृत्यु दर भी अधिक है।

डब्ल्यूईएफ के अध्ययन के मुताबिक अपोलो अस्पताल पूरे भारत में 30 करोड़ से अधिक रोगियों की सेवा करने वाले 50 से अधिक अस्पतालों का संचालन करता है। अपोलो ने एक जोखिम स्तरीकरण गणना-पद्धति (एल्गोरिदम) बनाने की सोची जो भारत में किसी भी व्यक्ति में हृदय रोग के जोखिम संबंधी 'स्कोर' दे सकेगा।

रिपोर्ट ने स्वास्थ्य देखभाल एआई के इस्तेमाल के लिए एक वैश्विक वर्गीकरण का प्रस्ताव रखते हुए कहा है कि वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली रोगियों की देखभाल में बदलाव लाने, लागत कम करने और लोगों को स्वस्थ, लंबा जीवन जीने में सक्षम बनाने के लिए इन नई प्रौद्योगिकियों की पूरी क्षमता का लाभ उठाने में मददगार हो सकता है।

बेंगलुरू, मुंबई व चेन्नई में खूब निकल रहीं ब्लू कालर जॉब

नई दिल्ली (वार्ता)।

बेंगलुरू, मुंबई, और चेन्नई उन शहरों की सूची में सबसे ऊपर है, जहां काल सेंटर, डिलीवरी एक्जियूटिव और कुकिंग क्षेत्र में बंपर नौकरियां मिल रही है।

रोजगार प्लेटफार्म इंडीड ने ब्लू कालर नौकरियों की मांग के बारे में नए आंकड़े जारी किए है। मई 2020 से मई 2023 के डेटा के अनुसार उपरोक्त महानगरों में ब्लू कालर नौकरियों के लिए बंपर भर्तियां हो रही हैं। विकसित होती आर्थिक स्थितियों के कारण कुछ विशेष उद्योगों को दूसरों से ज्यादा फायदा मिला है और वे ब्लू-कालर नौकरियों के लिए आकर्षक अवसर प्रदान कर रहे हैं। उपरोक्त नौकरियों के लिए भर्ती करने वाले शहरों में मुंबई काल सेंटर की नौकरियों (12 प्रतिशत) के साथ शीर्ष पर है, जिसके बाद बेंगलुरू (11.86 प्रतिशत) और चेन्नई (8 प्रतिशत) का स्थान आता है। कुकिंग की भी सबसे ज्यादा नौकरियां मुंबई (13 प्रतिशत) में है, जिसके बाद बेंगलुरू (7.47 प्रतिशत) और चेन्नई (7 प्रतिशत) का स्थान आता है। जबकि डिलीवरी एक्जियूटिव की नौकरियां चेन्नई में सबसे ज्यादा (12 प्रतिशत) है, जिसके बाद बेंगलुरु (8 प्रतिशत) और मुंबई (5प्रतिशत) का स्थान आता है।

■ कॉल सेंटर जॉब के मामले में मुंबई आगे
■ बेंगलुरू दूसरे और चेन्नई नंबर तीन पर
■ कुकिंग के जॉब के मामले में भी शिखर पर रहा है मुंबई

क्या है ब्लू कालर जॉब

ब्लू कालर वर्कर उन लोगों को कहा जाता है, जो कंपनियों में मैनुअल लेबर करते हैं इनकी डिमांड ज्यादा श्रम वाली इंडस्ट्री में है।

कंपनी ने कहा कि ई-कामर्स और तीव्र कामर्स की वृद्धि ने रोजगार निर्माण में मुख्य भूमिका निभाई है। फूड डिलीवरी उद्योग द्वारा कई रेस्टोरेंट्स और क्लाउड किचन का उदय हुआ, जिससे कुशल कुक और शेफ की मांग बढ़ी।

दिलचस्प बात यह है कि इस प्लेटफार्म पर डिलीवरी एक्जियूटिव की मांग का नेतृत्व चेन्नई कर रहा है। काल सेंटर एक्जियूटिव्स की नौकरियों में भी वृद्धि देखने को मिल रही है क्योंकि कंपनियों को आनलाइन आर्डर से संबंधित पूछताछ के लिए बड़ी संख्या में कस्टमर सपोर्ट टीमों की जरूरत है। इन शहरों में भर्तियों का ट्रेंड नौकरी के बाजार का बदलता परिदृश्य प्रदर्शित करता है।

बेंगलुरू हवाईअड्डे ने यात्रियों की मदद के लिए ऐप पेश किया

बेंगलुरू (भाषा)।

बेंगलुरू के केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे (बीएलआर हवाईअड्डा) से यात्रा कर रहे यात्रियों की सुविधा के लिए एक नया ऐप पेश किया गया है।

बीएलआर हवाईअड्डे का संचालन करने वाली बेंगलुरू इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड ने ग्रेमैटर साफ्टवेयर सर्विसेज के साथ मिलकर 'बीएलआर पल्स' नाम से इस ऐप को तैयार किया है। बीएलआर पल्स की मदद से यात्रियों को हवाईअड्डे पर एक नया अनुभव मिलेगा और यह ऐप डिजिटल यात्रा मित्र की तरह काम करेगा।

दस से पंद्रह फीसद बढ़ सकता है तिलहन निर्यात

नई दिल्ली (भाषा)। चालू वित्त वर्ष के दौरान भारत का तिलहन निर्यात 10 से 15 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। निर्यातकों ने बताया कि व्यापारियों को दक्षिण पूर्व एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका से अच्छे आर्डर मिल रहे है। वित्त वर्ष 2022-23 में तिलहन निर्यात 20 प्रतिशत से अधिक बढ़कर 1.33 अरब अमेरिकी डालर (लगभग 10,900 करोड़ रु पए) था। देश से निर्यात किए जाने वाले मुख्य तिलहन में मूंगफली, तिल, सोयाबीन, अरंडी और सूरजमुखी शामिल है।

भारतीय तिलहन एवं उपज निर्यात संवर्धन परिषद (आईओपीईपीसी) के पूर्व चेयरमैन खुशवंत जैन ने कहा कि मांग अच्छी है और हमें इस साल भी अच्छी वृद्धि की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि तिलहन का रकबा बढ़ने से इस साल पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी और इसका मतलब है कि हम अधिक निर्यात कर सकेंगे। भारत के लिए प्रमुख निर्यात गंतव्य इंडोनेशिया, वियतनाम, चीन, मलेशिया, फिलीपीस और यूरोपीय संघ है। आईओपीईपीसी के उपाध्यक्ष रितुपर्णा डोले ने कहा कि मौजूदा स्थिति को देखते हुए हमें 10-15 प्रतिशत वृद्धि की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि कुल तिलहन निर्यात में मूंगफली और तिल की हिस्सेदारी 80-85 फीसदी है।

सैफ चैंपियनशिप : कुवैत के खिलाफ भारत को आज मिलेगी कड़ी टक्कर

एजेंसी ▶▶ बेंगलुरु

सेमीफाइनल में जगह पक्की कर चुकी भारतीय टीम मंगलवार को सैफ चैंपियनशिप फुटबॉल में जब कुवैत के खिलाफ मैच के लिए मैदान में उतरेगी तो उसे ग्रुप चरण में सबसे कड़ी परीक्षा देनी होगी। भारत की तरह कुवैत भी दो मैचों में दो जीत से छह अंकों के साथ सेमीफाइनल में पहुंच गया है और मंगलवार को यहां के श्री कांतीर्वा स्टेडियम में होने वाले मैच से ग्रुप ए की तालिका में शीर्ष स्थान पर रहने वाले का फैसला होगा। दिन के दूसरे मैच में पाकिस्तान और नेपाल का आमना-सामना होगा। यह दोनों टीमें अपने शुरुआती दोनों मैचों में हार के बाद पहले ही सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो चुकी हैं।

भारतीय टीम छेत्री पर निर्भर

भारतीय टीम गोल करने के लिए अब भी काफी हद कर अपने करिश्माई कप्तान सुनील छेत्री पर निर्भर है। छेत्री ने पाकिस्तान के खिलाफ हैट्रिक लगाने के बाद नेपाल के खिलाफ मैच का पहला गोल दागा था। सहल ने कहा, 'खेल के हर पहलू में सुधार की गुंजाइश है। यह गेंद को अपने नियंत्रण में रखने के बारे मे है, जितना हो सके गेंद को अपने पास रखें और गोल करें। हमारे पास एक शानदार खिलाड़ी (छेत्री) है जो हमारे लिए गोल करता है। कोच ने हमें इस स्थिति को बदलने के लिए कहा है। सिर्फ छेत्री भाई पर निर्भर रहने के बजाय हमें गोल करने का तरीका ढूंढना होगा।'

आज के मैच

पाकिस्तान/नेपाल : दोपहर 03:30 बजे
भारत/कुवैत : शाम 07:30 बजे

भारत के खिलाफ अब तक गोल नहीं

भारत ने पाकिस्तान को 4-0 से हरा कर अपना अभियान शुरू किया था। टीम ने इसके बाद नेपाल पर 2-0 की जीत दर्ज की। पिछले आठ मैचों में भारतीय टीम के खिलाफ कोई गोल नहीं हुआ है और इससे टीम की मजबूत रक्षापंक्ति के बारे में पता चलता है। कुवैत जैसी मजबूत टीम के खिलाफ भारत को अपने खेल का स्तर ऊंचा करना होगा। टीम को मिडफील्ड और अग्रिम पंक्ति के बीच बेहतर तालमेल बिठाना होगा। भारत को नेपाल की रक्षण को भेदने के लिए एक घंटे से अधिक समय तक संघर्ष करना पड़ा था और कुवैत की अधिक संगठित और अनुभवी रक्षापंक्ति उसके लिए अधिक चुनौती पेश करेगी।

कुवैत का पलड़ा भारी

दोनों देशों के मुकाबले में कुवैत का पलड़ा भारत पर भारी है। टीम दो मैचों में जीत दर्ज की है जबकि भारत एक मुकाबले को ही जीत सका है। कुवैत ने इस टूर्नामेंट में नेपाल पर 3-1 और पाकिस्तान पर 4-0 की प्रभावशाली जीत दर्ज की है। यहां की परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाने में समय लगने के बावजूद वे भारत के खिलाफ भी इस लय को बनाए रखना चाहेंगे। जिससे सेमीफाइनल से पहले टीम की मानसिक स्थिति मजबूत रहे।

गेंद पर पकड़ बेहतर

कुवैत के कोच रुई बैटो ने कहा, 'हम कभी-कभी अच्छा खेलते हैं, लेकिन हमारी गेंद पर पकड़ बेहतर हो सकती है। हमने यहां आने से पहले अफ्रीका की टीमों के साथ कठिन मैच खेले थे। इस मौसम में खेलना बहुत मुश्किल है, क्योंकि उमस बहुत अधिक है। लेकिन मुझे अपने खिलाड़ियों को पिछले दो मैचों के लिए बधाई देनी होगी।'दोनों टीमों के बीच 2010 के बाद यह पहला मुकाबला होगा।

खबर संक्षेप

मुक्केबाजी महिला कोच भास्कर ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली। भास्कर भट ने भारतीय खेल प्राधिकरण के हाई परफोर्मेंस निदेशक की अपनी नई भूमिका पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एशियाई खेलों से कुछ महीने पहले महिला मुक्केबाजी के मुख्य कोच का पद छोड़ दिया है। सितंबर में होने वाले एशियाई खेलों से दो महीने से कुछ अधिक समय पहले भास्कर ने इस्तीफा दिया है। एशियाई खेल महाद्वीप के मुक्केबाजों के लिए पहली ओलंपिक क्वालीफायर प्रतियोगिता है। इस महीने की शुरुआत में भास्कर को साइ में हाई परफोर्मेंस निदेशक नियुक्त किया गया था।

पीसीबी अध्यक्ष चुनाव में हो सकता है विलंब

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के नए अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया में देरी हो सकती है क्योंकि पूर्व प्रबंधन समिति के दो सदस्यों ने लाहौर उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। लाहौर उच्च न्यायालय सोमवार को पीसीबी प्रबंधन समिति के पूर्व सदस्यों शकील शेख और गुल जादा द्वारा जका अशरफ को अध्यक्ष के तौर पर नियुक्त करने वाली चुनाव प्रक्रिया और नये प्रमुख का चुनाव करने वाले 'बोर्ड ऑफ गवर्नर्स' की वैधता के खिलाफ दायर दो याचिकाओं पर सुनवाई करेगा। याचिकाकर्ताओं ने न्यायाधीश से अध्यक्ष के चुनाव पर रोक लगाने और बीओजी को तब तक निलंबित करने का अनुरोध किया है जब तक कि उनकी याचिकाओं पर फैसला नहीं आ जाता है।

बीएसएफ मुख्यालय को एस्ट्रो टर्फ मैदान समर्पित

जालंधर। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने सोमवार को यहां बीएसएफ मुख्यालय पर हॉकी के लिये आधुनिक एस्ट्रो टर्फ का उद्घाटन किया। इस मौके पर ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत में खेलों को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों का भी उल्लेख किया। ठाकुर के हवाले से एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया, 'खेल सर्वांगीण विकास का जरिया है और भारत सरकार हमारे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को जरूरी बुनियादी ढांचा और मौके देने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। यह उसी सिलसिले का हिस्सा है।'

फिट होने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे केन

वेलिंगटन। आईपीएल के दौरान चोटिल हुए केन विलियमसन को उम्मीद है कि भारत में इस साल के आखिर में होने वाले वनडे विश्व कप से पहले वह फिट हो जाएंगे। न्यूजीलैंड के सीमित ओवरों के कप्तान विलियमसन को 31 मार्च को चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ गुजरात टाइटंस के पहले मैच में पैर में चोट लगी थी।

वर्ल्ड कप क्वालीफायर : कप्तान विलियम्स ने खेली 174 रन की तूफानी पारी

जिम्बाब्वे पहली बार 400 पार अमेरिका को 304 रनों से कुचला

एजेंसी ▶▶ हरारे

आईसीसी वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 के 17वें मैच में जिम्बाब्वे ने अमेरिका को 304 रनों से रौंद दिया है। पहले बल्लेबाजी करते हुए जिम्बाब्वे के बल्लेबाजों ने हरारे के मैदान पर जमकर गदर मचाया। कप्तान सीन विलियम्स द्वारा खेली गई 174 रन की तूफानी पारी के बूते जिम्बाब्वे ने वनडे क्रिकेट में अपना सबसे बड़ा स्कोर खड़ा किया। इसके साथ ही 50 ओवर के फॉर्मेट में टीम ने पहली बार 400 का आंकड़ा भी पार किया। जवाब में अमेरिकी टीम 25.1 ओवर में 10 विकेट के नुकसान पर 104 रन ही बना सकी।

कप्तान सीन विलियम्स की शतकीय पारी के दम पर जिम्बाब्वे ने वनडे क्रिकेट के इतिहास में पहली बार 400 रन का आंकड़ा पार किया। अमेरिका के खिलाफ बैटिंग करते हुए जिम्बाब्वे की टीम ने स्कोर बोर्ड पर 6 विकेट खोकर 408 रन टांगे। वहीं, जॉयलॉर्ड गम्बी ने भी बेहतरीन बैटिंग करते हुए 78 रन का योगदान दिया। आखिरी के ओवरों में रयान बर्ल ने तूफानी अंदाज में बैटिंग करते हुए सिर्फ 16 गेंदों पर 47 रन कूटे। सिकंदर रजा ने 27 गेंदों पर 48 रन जड़े।

विलियम्स ने मचाई तबाही

जिम्बाब्वे के स्टार बल्लेबाज ने अमेरिका के खिलाफ खेले जा रहे मुकाबले में जमकर चौके-छक्कों की बरसात की। विलियम्स ने ताबड़तोड़ अंदाज में बैटिंग करते हुए महज 101 गेंदों पर 174 रन की यादगार पारी खेली। इस दौरान जिम्बाब्वे के कप्तान के बल्ले से 21 चौके और 5 गगनचुंबी छक्के निकले। विलियम्स अपने दोहरे शतक से भले ही चूक गए, लेकिन उन्होंने अपने वनडे कॅरियर की सबसे बड़ी पारी खेली।

दूसरी सबसे बड़ी जीत

जिम्बाब्वे ने पहले यूनाइटेड स्टेट्स के खिलाफ 408/6 रन का विशाल स्कोर बनाया और फिर विरोधियों को सिर्फ 104 रन पर समेटते हुए 304 रन की शानदार जीत हासिल की। इस तरह यह मेंस एकदिवसीय इंटरनेशनल के इतिहास की दूसरी सबसे बड़ी जीत हो गई। सबसे बड़ी जीत का रिकॉर्ड भारत के नाम है, जो उसने जनवरी 2023 में श्रीलंका के खिलाफ 317 रन से हासिल की थी।

पांच सबसे बड़ी जीत

टीम	खिलाफ	अंतर
इंडिया	श्रीलंका	317 रन
जिम्बाब्वे	यूएसए	304 रन
न्यूजीलैंड	आयरलैंड	290 रन
ऑस्ट्रेलिया	अफगानिस्तान	275 रन
द.अफ्रीका	जिम्बाब्वे	272 रन

14 साल पुराना रिकार्ड तोड़ा

जिम्बाब्वे की टीम ने वनडे क्रिकेट के इतिहास में पहली बार 400 रन का आंकड़ा पार किया है। इससे पहले इस फॉर्मेट में टीम का सर्वाधिक स्कोर 351 रन था, जो जिम्बाब्वे ने साल 2009 में केन्या के खिलाफ बनाया था। 2003 में नामीबिया के खिलाफ खेलते हुए जिम्बाब्वे ने 340 रन बनाए थे, जो टीम का अब तीसरा सर्वाधिक स्कोर है।

तीसरी सबसे बड़ी इनिंग

सीन विलियम्स द्वारा खेली गई 174 रन की पारी वनडे क्रिकेट के इतिहास में जिम्बाब्वे की ओर से तीसरी सबसे बड़ी पारी भी है। विलियम्स ने अपनी इनिंग के दौरान अमेरिका के हर गेंदबाज की जमकर धुनाई की। इससे पहले नेपाल के खिलाफ भी विलियम्स का बल्ला जमकर बोला था और उन्होंने महज 70 गेंदों पर शतक ठोक था

मैक्सिको ने होंडुरास को 4-0 से हराया, रोमो ने दागा गोल

नई दिल्ली ▶▶ ह्यूस्टन

लुइस रोमो के दो गोल की मदद से मैक्सिको ने कोनकाकैफ गोल्ड कप फुटबॉल के शुरुआती मुकाबले में होंडुरास को 4-0 से शिकस्त दी।

अंतरिम कोच जैमे लोजानो की देखरेख में यह टीम की पहली जीत है। रोमो ने मैच के 50वें सेकंड में गोल कर टीम का खाता खोला। यह गोल्ड कप में टीम का सबसे तेज गोल है। उन्होंने 23वें मिनट में अंतरराष्ट्रीय कॅरियर के अपने तीसरे गोल से मैक्सिको की बढ़त को दोगुना कर दिया।

ग्रुप बी के इस मैच में ऑबेलिन पिनेडा (52वें मिनट) और लुइस शावेज (64वें मिनट) ने टीम के लिए दो अन्य गोल किए। ग्रुप के अन्य मैच में हैती ने आमंत्रित टीम कुवैत को 2-1 से हराया। फ्लोरिडा में खेले गए ग्रुप ए के मैच में त्रिनिदाद एवं टोबेगो ने सेंट किट्स एवं नेविस को 3-0 से हराया।

नीदरलैंड ने वेस्टइंडीज को सुपर ओवर में हराया

हरारे। ऑलराउंडर लोगान वान बीक के सुपर ओपर में शानदार प्रदर्शन की बदौलत नीदरलैंड ने सोमवार को यहां आईसीसी पुरुष विश्व कप क्वालीफायर में वेस्टइंडीज को हरा दिया। वेस्टइंडीज की यह लगातार दूसरी हार है। क्राइस्टचर्च में जन्मे वान बीक ने सुपर ओवर में तीन छक्कों और तीन चौक्कों से 30 रन बनाने के बाद गेंद भी थामी और वेस्टइंडीज को सिर्फ आठ रन बनाने दिए। इस जीत से टीम ग्रुप ए में दूसरे स्थान पर रही और सुपर छह चरण में दो अंक के साथ जाएगी। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निकोलस पूरन के नाबाद 104 रन की बदौलत छह विकेट पर 374 रन बनाए। इसके जवाब में नीदरलैंड ने तेजा निदामानुरू (111) के शतक और कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स (67) के साथ उनकी 143 रन की साझेदारी से नौ विकेट पर 374 रन का स्कोर बनाकर मैच टाई किया और फिर सुपर ओवर में बाजी मारी।

झूलन, नाइट और मोर्गन एमसीसी समिति से जुड़े

एजेंसी ▶▶ लंदन

भारत की दिग्गज महिला क्रिकेटर झूलन गोस्वामी और इंग्लैंड की हीथर नाइट और इयोन मोर्गन एमसीसी विश्व क्रिकेट समिति की लार्ड्स में होने वाली बैठक से पहले समिति से जुड़ गए हैं। क्लब ने सोमवार को यह जानकारी दी।

झूलन के अलावा इंग्लैंड की महिला टीम की कप्तान नाइट और 2019 विश्व कप विजेता पुरुष टीम के कप्तान मोर्गन भी डब्लूसीसी से जुड़ गए हैं। डब्लूसीसी एक स्वतंत्र समिति है जिसमें दुनिया भर के मौजूदा और पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर, अंपायर और अधिकारी शामिल हैं। महिला क्रिकेट की सबसे सफल गेंदबाजों में शामिल झूलन ने पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा था। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे एशेज टेस्ट से पहले डब्ल्यूसीसी की सोमवार और मंगलवार को लार्ड्स में बैठक होगी।

सैमसोनोवा, इरानी बैड होमबर्ग ओपन में जीते

एजेंसी ▶▶ बैड होमबर्ग

दूसरी वरीयता प्राप्त ल्यूडमिला सैमसोनोवा ने विक्टोरिया टोमोवा पर 6-1, 6-4 से जीत के साथ बैड होमबर्ग ओपन टेनिस के दूसरे दौर में प्रवेश किया। सारा इरानी ने बेल्जियम की क्वालीफायर मैरीना जैनेवस्का को 6-2, 6-3 से शिकस्त देकर विंबलडन के 2016 सत्र के बाद टूर-स्तर पर घसियाले कोर्ट पर पहली जीत दर्ज की।

नौवीं वरीयता प्राप्त अन्ना ब्लिंकोवा ने स्थानीय खिलाड़ी सबाइन लिसिकी को 3-6, 6-1, 7-5 से हराया तो वहीं रूस की एवगेनिया रोडिना ने अमेरिक की केटी वोलिनेट्स को 6-0, 6-4 से मात दी।

स्पेशल ओलंपिक विश्व खेल

भारत ने 76 स्वर्ण सहित 202 पदक के साथ किया समापन

नई दिल्ली ▶▶ बर्लिन

भारत ने यहां स्पेशल ओलंपिक विश्व खेलों में अपने अभियान का अंत 76 स्वर्ण सहित 202 पदक के साथ किया। रविवार को प्रतियोगिता के अंतिम दिन भारतीय एथलीटों ने ट्रैक स्पर्धाओं में दो स्वर्ण, तीन रजत और एक कांस्य पदक से कुल छह पदक जीते।

आंचल गोयल ने महिलाओं की लेवल बी 400 मीटर दौड़ और रविमति अरुमुगम ने महिलाओं की लेवल सी 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीते। भारत ने इन खेलों में 76 स्वर्ण, 75 रजत और 51 कांस्य पदक जीते। भारतीय दल में 198 खिलाड़ी और यूनीफाइड साझेदार शामिल थे जिन्होंने 16 खेलों में हिस्सा लिया।

एआई कमेंटेटर के भाषा, लहजा और सेंस ऑफ ह्यूमर पर बहस

विंबलडन में एआई करेगा इंसानी भाषा में कमेंटरी

नई दिल्ली ▶▶ लंदन

विंबलडन के आयोजक ऑल इंग्लैंड क्लब ने घोषणा की है कि इस वर्ष विंबलडन के एप और वेबसाइट पर महिला और पुरुष की आवाज में इंसान की जगह एआई निर्मित कमेंटेटर कमेंटरी करेंगे।

विंबलडन के मैचों का लाइव प्रसारण और कमेंटरी की शुरुआत 1937 में बीबीसी पर हुई थी, लेकिन यह पहली बार होगा कि एआई कमेंटेटर लिखने और बोलने दोनों ही काम करेंगे। बताया जा रहा है कि एआई कमेंटेटर को इंसान की ओर से कोई इनपुट भी नहीं दिया जाएगा। वह खुद ही अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करेगा। विशेषज्ञों का कहना है कि एआई कमेंटेटर मनुष्य की तरह भाषा, लहजा और सेंस ऑफ ह्यूमर कहां से लाएगा। क्रिकेट के दिग्गज कमेंटेटर सुशील दोषी ने कहा- नई तकनीक का स्वागत किया जाना चाहिए। लोग खासकर युवा पीढ़ी नई चीजों की ओर आकर्षित होती हैं। लेकिन एक संदेह यह है कि एआई आधारित कमेंटेटर भाषा, बोलने का लहजा और सेंस ऑफ ह्यूमर मनुष्य की तरह कैसे ला सकेगा। लोग सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री और हर्षा भोगले सहित अन्य कमेंटेटरों को सुनना पसंद करते हैं। मैच के दौरान कोई विषम स्थिति आती है तो उस समय एआई कमेंटेटर क्या इंसानों की तरह संवाद कर सकेगा। ऐसे कई सवालों पर बड़े स्तर पर बहस की जरूरत है।

अनूठी भाषा में तैयार किए गए हैं एआई कमेंटेटर

ऑल इंग्लैंड क्लब एआई कमेंटेटर को आईबीएम की मदद से लॉन्च करने जा रहा है। इसके लिए एआई कमेंटेटर को टेनिस की अनूठी भाषा में तैयार किया गया है। इसके डाटा में शामिल होगा कि गेंद कहां पर है। खिलाड़ी किस तरह के शॉट खेल रहे हैं। कमेंटरी के दौरान महिला और पुरुष टिप्पणीकारों का इस्तेमाल किया जाएगा, लेकिन आवाज में मनुष्य का कोई इनपुट नहीं रहेगा।

लाइन जजों का काम भी संभाल सकती है एआई

विश्व के महत्वपूर्ण खेल क्रिकेट, फुटबाल, टेनिस आदि में समय-समय पर तकनीक का इस्तेमाल किया जाता रहा है। हॉक आई के साथ ही वार का प्रयोग खूब हो रहा है। माना जा रहा है कि टेनिस में जल्द ही लाइन जजों की जगह एआई निर्मित कृत्रिम जजों को लगाया जाएगा। आईबीएम स्पोर्ट्स पार्टनरशिप के केविन फेरार ने कहा, एआई एंकर या कमेंटेटर मानव की जगह लेने के बजाय उसके विकल्प की भूमिका में होगा। अभी एआई कमेंटेटर का इस्तेमाल एप और वेबसाइट पर दैनिक हाइलट आदि के लिए किया जाएगा। बाद में विंबलडन के प्रसारक बीबीसी पर सामान्य मैचों जैसे जूनियर, सीनियर और व्हीलचेयर टेनिस में इसको आजमाया जा सकता है।

गुवाहाटी में वार्षिक अंबुवाची मेले की समाप्ति के बाद फिर से खुले कामाख्या मंदिर में पूजा करने के लिए लाखों श्रद्धालु एकत्रित हुए। रात में मंदिर रोशनी से नहा गया।

मंदिर के कपाट खुलते ही उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

गुवाहाटी। असम के शहर गुवाहाटी के विश्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ कामाख्या मंदिर में बड़ी संख्या में देवी कामाख्या की पूजा के लिए श्रद्धालुओं का तांता जमा हुआ है। तीन दिन तक बंद रहने के बाद मंदिर के कपाट सोमवार को दोबारा खुले। मां के दर्शन पाने को सभी श्रद्धालु अपनी बारी का कतारों में इंतजार कर रहे थे। उधर, इस साल ऐतिहासिक मंदिर में वार्षिक अंबुबाची मेला 22 जून से शुरू हुआ। जिसमें दूर-दूर से लाखों श्रद्धालु पहुंचे हैं। श्रद्धालुओं के साथ ही देश और दुनिया से तंत्र की साधना करने वाले साधक और साधु पहुंचे। सोमवार, 26 जून को अंबुबाची मेले का अंतिम दिन था। तीर्थयात्रियों की एक बड़ी भीड़ देवी कामाख्या से प्रार्थना करने के लिए यहां उमड़ पड़ी।

कामाख्या देवी मंदिर में क्यों लगता है मेला

कामाख्या देवी मंदिर को लेकर मान्यता है कि वहां माता हर साल रजस्वला होती हैं। रजस्वला होने पर ही अंबुबाची मेले का आयोजन किया जाता है। कहा जाता है कि मां के रजस्वला होने पर तीन दिनों तक गुवाहाटी में कोई मंगल कार्य नहीं होता है। इस बीच ब्रह्मपुत्र नदी का जल लाल रहता है। इस वर्ष अंबुबाची मेले के लिए 23 जून को सुबह 2.30 बजे प्रवृत्ति आयोजित होने के बाद मंदिर का मुख्य द्वार तीन दिन और तीन रातों के लिए बंद कर दिया गया। अंबुबाची मेले के लिए निवृत्ति 26 जून को हुई निवृत्ति के बाद, सभी समारोह और पूजाएँ आयोजित की किए गए । मंदिर में मां के दर्शन करने आने वाले भक्तों को प्रसाद के रूप में सफेद कपड़ा दिया जाता है। जिसे अंबुवासी कहते हैं। इसी वजह से इस मेले का नाम अंबुवासी मेला पड़ा है।

POKपर राजनाथ ने उड़ाई पाक की नींद हमें ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं

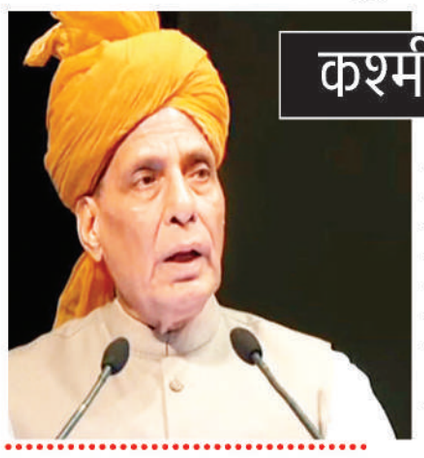

कश्मीर भूलकर अपना घर संभाले पाक

नई दिल्ली ■ एजेंसी

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि अब तो आप देख रहे हैं कि पीओके में क्या हो रहा है। मुझे लगता है कि बहुत ज्यादा हमको कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। पीओके के लोगों पर जो जुल्म ढाया जा रहा है, वहीं से यह डिमांड उठेगी कि हमको भारत में अपने को मर्ज करना है। आपने देखा भी होगा कि वहां के लोग नारे लगा रहे हैं कि हमको भारत में विलय करो। यह कोई छोटी बात नहीं है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि मैं पाक सरकार को स्पष्ट बतलाना चाहता हूं कि कश्मीर की रट लगाकर कुछ हासिल नहीं होगा, अपना घर संभालिए। जिस तरीके के हालात वहां हैं, ऐसे में कुछ भी हो जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। पीओके पर गैरकानूनी कब्जा कर लेने से पाक को अधिकार नहीं मिल जाता।

संसद में पीओके को लेकर एक सर्व सम्मत प्रस्ताव है कि वह भारत का हिस्सा था, है और रहेगा। इस पर संसद में एक नहीं, तीन प्रस्ताव पारित किए जा चुके हैं। इस दौरान राजनाथ ने आतंकवाद पर हमारी सरकार की सख्त पॉलिसी का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद ने भारत में हजारों निर्दोष लोगों की जानें ली हैं। पाक को आतंकवाद से प्रभावित देश मानने की हम लोगों ने एक बार गलती कर दी थी।

मोदी सरकार में आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई शुरू की

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारी सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई शुरू की है। पहली बार दुनिया ने जाना कि आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस का मतलब क्या होता है। सबको पता है कि उरी और पुलवामा की घटना के बाद केंद्र ने क्या किया। विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर ने आतंकवाद का दंश झेला है। यहां के लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि आतंकवाद का जहर समाज को कैसे जड़ों से खोखला कर देता है। आतंकवाद पर जम्मू-कश्मीर में सख्त कार्रवाई की गई है। राजनाथ ने कहा कि एक समय था जब दुनिया का सबसे ताकतवर देश अमेरिका आतंकवाद को एक पॉलिटिकल वेपन (राजनीतिक हथियार) के तौर पर देखता था लेकिन 9/11 की घटना के बाद उसका नजरिया बदला। अब अमेरिका यह मानता है कि आतंकवाद मानवता के खिलाफ एक वैश्विक अपराध है। मुस्लिम देशों में भी यह नजरिया बन चुका है।

गैंगस्टर गोल्डी बराड़ बोला, हमारी गैंग ने किया सिद्धू मूसेवाला का मर्डर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मशहूर पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हत्या ने पूरे देश को दहला कर रख दिया था। इस सनसनीखेज हत्याकांड के पीछे नाम आया था बिश्नोई गैंग का। अब कुख्यात गैंगस्टर सतविंदर सिंह उर्फ गोल्डी बराड़ ने एक न्यूज चैनल से बात करते हुए सरेआम कुबूल किया है कि मूसेवाला का मर्डर उसी ने कराया था। साथ ही गोल्डी बराड़ ने उस वजह का खुलासा भी किया, जिसके कारण उसके गुर्गों ने मूसेवाला को गोलियों से भून डाला था। एक करोड़ के इनामी कुख्यात गैंगस्टर गोल्डी बराड़ ने बताया कि इस काम का कोई एक रीजन नहीं है। इसके मल्टीपल रीजन हैं। मूसेवाला अंहकारी था। बिगड़ा हुआ था।

25 राज्यों में दो दिन भारी बारिश का अनुमान

- 20 घंटे में हिमाचल में फिर लैंडस्लाइड की हुई घटना
- बद्रीनाथ हाईवे भी बहा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मौसम विभाग ने सोमवार को बताया कि 48 घंटों में मध्य प्रदेश समेत 25 राज्यों में भारी बारिश का अनुमान है। उधर, हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में बारिश की वजह से पिछले 20 घंटे में लैंडस्लाइड की दूसरी घटना हुई। इस वजह से चंडीगढ़-मनाली एनएच-21 सात मील और चार मील के पास 20 घंटे बंद रहा। इससे रूट पर 10 किलोमीटर लंबा जाम लग गया और सैकड़ों गाड़ियां जाम में फंस गईं। 20 घंटे की मशक्कत के बाद हाईवे का सिंगल लेन शुरू कर दिया गया। वहीं, उत्तराखंड में भारी बारिश से बद्रीनाथ हाईवे बह गया है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने बताया कि खराब मौसम की वजह से केदारनाथ यात्रा रोक दी गई है।

25 राज्यों में भारी बारिश का अनुमान: मौसम विभाग के मुताबिक, झारखंड, हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश, कोंकण-गोवा, छत्तीसगढ़, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, पूर्वी राजस्थान, गुजरात, मध्य महाराष्ट्र, विदर्भ, तटीय कर्नाटक और केरल में दो दिन भारी बारिश हो सकती है।

ताईवानी विदेश मंत्री ने कहा–चीन ने की गुस्ताखी तो देंगे मुंहतोड़ जवाब

ताइवान, (एजेंसी)। ताइवान के विदेश मंत्री जौशीह जोसेफ वू ने चीन को किसी भी तरह की बलपूर्वक कार्रवाई करने से पहले अगाह किया है। विदेशमंत्री ने कहा है कि यदि चीन ऐसा कोई भी कदम उठाता है तो ताइवान मुंहतोड़ जवाब देने को तैयार है। जौशीह जोसेफ वू ने कहा कि ताइवान के खिलाफ चीन का खतरा जितना दिख रहा है उससे कहीं अधिक गंभीर है और बीजिंग द्वारा बलपूर्वक यथास्थिति बदलने के किसी भी प्रयास के दुनिया के लिए गंभीर परिणाम होंगे, जिसमें सेमीकंडक्टर की आपूर्ति बाधित होना भी शामिल है। ताइवान अपनी संप्रभुता की रक्षा को प्रतिबद्ध है। एक अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूह के साथ बातचीत में वू ने कहा कि ताइवान को अपने देश की संप्रभुता की रक्षा के लिएरूसी हमले का सामना करने वाले यूक्रेन के 'अविश्वसनीय दृढ़ संकल्प' से हौसला बढ़ गया है। चीन कहता रहा है कि ताइवान उसका हिस्सा है और उसे मुख्य भूमि के साथ फिर से एकीकृत किया जाना चाहिए और यदि इसके लिए जरूरी हुआ तो बल का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। चीन नियमित रूप से ताइवान के वायु रक्षा क्षेत्र में लड़ाकू विमान भेज रहा है और स्व-शासित द्वीप के करीब युद्धपोत तैनात कर रहा है। ताइवान के विदेश मंत्री ने कहा कि समय आ गया है कि सभी लोकतांत्रिक देश चीन के विस्तारवादी एजेंडे और विशेषकर समुद्री क्षेत्र में उसकी सैन्य ताकत से निपटने के तरीके खोजें।

चेन्नई में होटल की लिफ्ट में फंसकर युवक की मौत

चेन्नई, (एजेंसी)। तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में एक होटल की लिफ्ट में फंसने से युवक की दर्दनाक मौत हो गई। उसका आधा शरीर मशीन के अंदर फंसा हुआ था जबकि पैर बाहर की तरफ निकल गया था। दरअसल पेरम्बूर में 28 साल का युवक अभिषेक मायलापुर के सवेरा होटल में हाउसकीपर के रूप में काम करता था।

आज का इतिहास

- **1693:** लंदन में महिलाओं की पहली पत्रिका लेडीज मरकरी का प्रकाशन शुरू हुआ।
- **1838:** बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म हुआ था, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ही राष्ट्रगीत के रचयिता है।
- **1867:** बैंक ऑफ कैलिफार्निया का संचालन शुरू।
- **1893:** पंजाब के महाराज रणजीत सिंह का निधन। महाराज रणजीत सिख साम्राज्य के संस्थापक थे।
- **1914:** अमेरिका ने इथियोपिया के साथ वाणिज्य संधि पर हस्ताक्षर किए गए।
- **1940:** रोमानिया पर सोवियत सेना ने हमला किया।
- **1957:** ब्रिटेन की मेडिकल रिसर्च काउंसिल की पेश रिपोर्ट में धूम्रपान से फेफड़ों का कैंसर का खतरा बताया।
- **1964::** भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का संग्रहालय तीन मूर्ति भवन को बनाया गया।

Filmiतड़का

मुंबई। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की 'सत्यप्रेम की कथा' का नया गाना सोमवार को रिलीज हुआ है। 'पसूरी नू' गाने में अरिजीत सिंह की जादुई आवाज सुनाई दे रही है, जिसे फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की 'सत्यप्रेम की कथा' को लेकर दर्शकों के बीच क्रेज लगातार बढ़ रहा है। ये फिल्म अब बस अपनी रिलीज से कुछ ही दिन दूर है। फिल्म के शानदार ट्रेलर और गानों ने पहले ही लोगों के उत्साह को बढ़ा दिया है, लेकिन अब फैन्स और दर्शकों के इस क्रेज को एक और लेवल ऊपर ले जाने के लिए, मेकर्स फिल्म का लेटेस्ट ट्रैक 'पसूरी नू' लेकर सामने आए हैं। इस गाने में अरिजीत सिंह की जादुई आवाज सुनाई दे रही है।'सत्यप्रेम की कथा' के अब तक रिलीज हुए सभी गानों ने लोगों के दिलों में एक खास जगह बनाई है और एल्बम के हर गाने को दर्शकों का प्यार भी मिल रहा है।

सत्यप्रेम की कथा का 'पसूरी नू' हुआ रिलीज, अरिजीत सिंह ने अपनी आवाज से बनाया खास

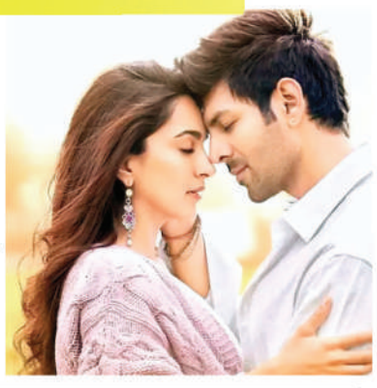

द केरल स्टोरी की सफलता के बाद सुदीप्तो सेन की अगली फिल्म होगी 'बस्तर'

मुंबई, (आरएनएन)। बॉलीवुड निर्देशक सुदीप्तो सेन द केरल स्टोरी की सफलता के बाद अब फिल्म बस्तर बनाने जा रहे हैं। फिल्म द केरल स्टोरी में अदा शर्मा ने लीड रोल प्ले किया है। इस फिल्म का निर्देशन सुदीप्तो सेन ने किया है जबकि निर्माण विपुल अमृतलाल शाह ने किया है। केरल में लड़कियों के धर्मांतरण, उन पर ज्यादती और फिर आतंकी संगठन की कहानी पर बनी 'द केरल स्टोरी' की सफलता के बाद सुदीप्तो सेन अब फिल्म बस्तर बनाने जा रहे हैं।'द केरल स्टोरी' की निर्माता विपुल अमृतलाल शाह और सुदीप्तो सेन की जोड़ी फिल्म बस्तर के जरिये फिर से साथ आ रही है। निर्माताओं ने एक अनाउंसमेंट पोस्टर के साथ अपने दूसरे सहयोग की घोषणा की जिसमें हम देख सकते हैं कि शांतिपूर्ण माहौल के बीच, फिल्म का टाइटल लाल रंग से रंगा हुआ दिखाई दे रहा है।कहा जा रहा है कि विपुल अमृतलाल शाह की आगामी फिल्म बस्तर एक और चौंकाने वाली और आंखें खोलने वाली फिल्म है, जो एक और सच्ची घटना से प्रेरित होगी। फिल्म का टाइटल अनाउंसमेंट पोस्टर भी इस बात की गवाही देता है जिसपर लिखा है, एक और सच्चाई जो देश को चौंका देगी। जैसा कि हम टाइटल अनाउंसमेंट पोस्टर में पढ़ सकते हैं जिसमें लिखा है, छिपा हुआ सच जो देश में तूफान लेकर आएगा।

केंद्र की नीतियां, कृषकों की मेहनत, वैज्ञानिक कुशलता से रिकॉर्ड उत्पादन: तोमर

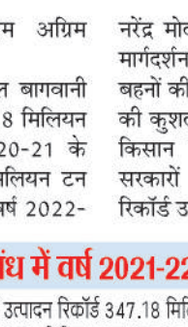

बागवानी उत्पादन रिकॉर्ड 350.87 मिलियन टन होगा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय/विभाग ने, प्राप्त जानकारी के आधार पर संकलित, बागवानी फसलों के क्षेत्र व उत्पादन के संबंध में 2021-22 के अंतिम आंकड़े और 2022-23 के प्रथम अग्रिम अनुमान जारी किए हैं।

2021-22 में कुल बागवानी उत्पादन रिकॉर्ड 347.18 मिलियन टन हुआ है, जो 2020-21 के उत्पादन से 12.58 मिलियन टन (3.76त्न) अधिक है। वर्ष 2022-23 में कुल बागवानी उत्पादन रिकॉर्ड 350.87 मिलियन टन होने का (प्रथम अग्रिम) अनुमान है, जो 2021-22 (अंतिम) की तुलना में 3.69 मिलियन टन की वृद्धि (1.06 फीसदी अधिक) है। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारे किसान भाइयों-बहनों की अथक मेहनत, वैज्ञानिकों की कुशलता और केंद्र सरकार की किसान हितैषी नीतियों व राज्य सरकारों के सहयोग से देश में रिकॉर्ड उत्पादन संभव हो रहा है।

उत्पादन के संबंध में वर्ष 2021-22 (अंतिम आंकड़े)

2021-22 में कुल बागवानी उत्पादन रिकॉर्ड 347.18 मिलियन टन हुआ, जो वर्ष 2020-21 के उत्पादन से लगभग 12.58 मिलियन टन (3.76 फीसदी) अधिक है। 2021-22 में फलों का उत्पादन 107.51 मिलियन टन हुआ, जबकि वर्ष 2020-21 में 102.48 मिलियन टन का उत्पादन हुआ था।सब्जियों का उत्पादन पिछले वर्ष के 200.45 मिलियन टन की तुलना में, 4.34 फीसदी की वृद्धि के साथ, वर्ष 2021-22 में 209.14 मिलियन टन हुआ। 2021-22 में प्याज का उत्पादन 31.69 मिलियन टन हुआ, जबकि वर्ष 2020-21 में 26.64 मिलियन टन का उत्पादन हुआ था।

जीमण उत्सव में बिखरे राजस्थानी छटा के कई रंग

लंदन/जयपुर, (एजेंसी)। लंदन में आयोजित जीमण 2023 उत्सव में राजस्थानी संस्कृति, पहनावा, भोजन, श्रृंगार, भाषा, अपनेपन की खुशबू के रंग बिखरे वहीं इसमें राजस्थानी भाषा को राजभाषा का दर्जा देने की मांग भी उठी। लंदन में राजस्थानवासियों की संस्था राजस्थान एसोसिएशन (यूके) के द्वारा सत्ताविस पाटीदार सेंटर व्हेंबले में आयोजित इस उत्सव में राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी, नारी शक्ति अवार्ड प्राप्त बाड़मेर की फैशन डिजाइनर एवं महिला रोजगार प्रेणता डॉ. रूमादेवी, ब्रिटिश सांसद वीरेंद्र शर्मा सहित करीब एक हजार लोगों ने शिरकत की।इस वर्ष मारवाड़ थीम पर आयोजित इस उत्सव में धोती कुर्ता, साफा, राजपूती एवं राजस्थानी पोशाकों में सजे धजे पुरूष, बच्चें और महिलाएं शामिल हुए।

35 बीआरएस नेता कांग्रेस में हुए शामिल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कर्नाटक का रण जीतने के बाद कांग्रेस के हौसले बुलंद हैं। दक्षिण के राज्यों में पैठ बनाने जुट गई है। सोमवार को तेलंगाना के कई नेताओं ने कांग्रेस का हाथ थामा। पार्टी बदलने की इस रस्म अदायगी से सीएम केसीआर की पार्टी बीआरएस को बड़ा झटका लगा है। तेलंगाना में 2023 के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और इस चुनावी साल में बीआरएस के कई नेताओं ने कांग्रेस की सदस्यता ले ली। 35 बीआरएस नेताओं ने कांग्रेस की सदस्यता ली है।

आगामी त्योहारों को लेकर जिला प्रशासन अलर्ट

त्यौहारों को शांतिपूर्वक से मनाने की डीएम ने लोगों से की अपील, सोशल मीडिया के माध्यम से अराजकता फैलाने वालों पर करें कार्रवाई

प्रखर जौनपुर। जिलाधिकारी अनुज कुमार झा की अध्यक्षता में सोमवार देर सायं ईद उल जुहा (बकरीद) व श्रावण त्यौहार को शांति एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाने के दृष्टिगत शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। जिलाधिकारी द्वारा शांति समिति के सदस्यों से आगामी 29 जून को बकरीद व 4 जुलाई से शुरू हो रहे श्रावण मास में जनपद के विभिन्न स्थानों पर बिजली व्यवस्था, साफ सफाई, कानून व्यवस्था सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्बाध बिजली आपूर्ति, स्ट्रीट लाइट, ट्रैफिक मैनेजमेंट, क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत पर्याप्त पानी की उपलब्धता और साफ सफाई सुनिश्चित करें।

उन्होंने उपस्थित सम्भ्रान्त नागरिकों, धर्मगुरू एवं समिति के सदस्यों से फीडबैक प्राप्त करते हुए आवश्यकतानुसार सम्बंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी त्यौहारों को

शांतिपूर्वक मनाने में अपने दायित्वों का निर्वहन करें। बैठक में उपस्थित धर्मगुरू सहित विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए सम्भ्रान्त नागरिकों ने प्रशासन के साथ अपने सामान्य परिचय के दौरान अपनेअपने क्षेत्रों में अमनए चैनए आपसी सौहार्द एवं शांतिपूर्ण तरीके से त्योहारो को मनाये जाने की परम्परा की याद दिलाते हुए आगामी त्योहार को मिलजुल कर मनाये जाने का आश्वासन दिया। जिलाधिकारी ने किसी भी समस्या अथवा शिकायत की दशा में तत्काल जिला पुलिस प्रशासन को सूचित करने की भी अपील की।

उन्होंने पुलिस अधीक्षक को सोशल मीडिया के माध्यम से अराजकता फैलाने वालों पर दंडात्मक कार्रवाई करने एवं इसके साथ ही अधिशासी अभियंता नगर पालिका को निर्देशित किया कि कुबार्नी के अवशेषों का निस्तारण सही तरीके से एवं विशेष जगह चिन्हित करके करें। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी अधिकारीगण मौके पर जाकर मुआयना करें व्यवस्थाओं का जायजा ले, ताकि किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके। इस अवसर पर अपर जिला मजिस्ट्रेट (वित्त एवं राजस्व) राम अक्षयबर चौहान, अपर पुलिस अधीक्षक नगर शैलेंद्र कुमार, नगर मजिस्ट्रेट देवेंद्र सिंह, बेसिक शिक्षा अधिकारी गोरखनाथ पटेल, एसडीएम मड़ियाहूं,सदर, शाहगंज सहित शांति समिति के सदस्य गण उपस्थित रहे।

सनातन धर्म के संस्थापक है प्रभु श्री रामः अंकित महाराज

प्रखर आजमगढ़। चंडेश्वर बाजार स्थित सिद्धि विनायक मैरेज हाल में चल रही श्री राम कथा के तीसरे दिन कथा वाचक अंकित चतुर्वेदी जी महाराज ने बताया कि प्रभु श्री राम ही हमारे सनातन धर्म के संस्थापक है और जब जब इस धर्म पर या धर्म से जुड़े भक्तो के ऊपर किसी भी प्रकार का संकट आता है तब वो दयालु परमात्मा बिना देर किए इस धरा धाम पर अवतरित होते है और विप्र, धेनु, संत और देवता की रक्षा करते हैं महाराज जी ने बताया कि प्रत्येक हिन्दू बिना श्री राम के मुक्त नही हो सकता, क्योंकि जीवन के प्रत्येक क्रिया कलाप में राम राम का उच्चारण अनायास निकल जाता है । जब दुख आता है तो राम, किसी का अभिवादन करना हो तो राम! राम ऐसे परमात्मा हैं जिनके बि ना यह शरीर, प्राण हीन हो जाती है! इस अवसर पर आइडियल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव साहित्यकार संजय कुमार पाण्डेय,भोजपुरी के लोकप्रिय गायक कलाकार राजेश रंजन, चंदेश्वर डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य पंडित दुर्गा प्रसाद द्विवेदी, कमलेश तिवारी ने माल्यार्पण कर कथावाचक से आशीर्वाद लिया! मौके पर मुख्य आयोजक आनंद मणि चतुर्वेदी, केशव प्रसाद पाण्डेय, आशुतोष चतुर्वेदी सहित भारी संख्या मे लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

हार्डवेयर की दुकान में लगी आग, लाखों का सामान जला

प्रखर जौनपुर। खुटहन थाना गेट के सामने शाहगंज मार्ग पर संचालित एक हार्डवेयर की दुकान में सोमवार की देर रात अबूझ हालत में लगी आग से लगभग सात लाख का सामान व दुकान में रखा कागजात जलकर राख हो गया। पीड़ित दुकानदार ने थाने में तहरीर देकर घटना की जांच कर कार्रवाई की मांग किया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। शेरापट्टी गांव निवासी अखिलेश कुमार यादव की सरस्वती मशीनरी के नाम से वर्षों से दुकान संचालित है। रोज की तरह वे शाम को दुकान का शटर बंद कर घर चले गए। आधी रात को दुकान के भीतर से धुआं का गुबार उठता दिखा। साथ ही साथ प्लास्टिक के जलने की बदबू आने लगी। मौजूद लोगों ने इसकी सूचना दुकान संचालक को दी। वह भागते हुए पहुंचे। शटर को खोले तो भीतर सारा सामान धू -धू कर जल रहा था। विद्युत कनेक्शन काटने के बाद लोगों ने पानी फेंक आग पर काबू पाया। दुकानदार का आरोप है कि दुकान में रखा सात लाख से अधिक कीमत का सामान व आवश्यक कागजात जल गया।

अहियापुर मोहल्ले में रात्रि में बिजली कटौती से लोगों का जीवन दूभर

प्रखर जौनपुर। कोतवाली थाना अंतर्गत मोहल्ला अहियापुर दो वार्डों में बटा हुआ भाग जो कि एक तरफ शहाबुद्दीनपुर और दूसरी तरफ अहियापुर है जिसमें से शहाबुद्दीनपुर मोहल्ला में छह सात घर का लाइट का एक डीपी बना होता है उसमें लगातार तीन दिनों से रात को लाइट चली जाती है जिसमे से दो दिन में कई बार अहियापुर स्थित मोहल्लेवासियों द्वारा पावरहाउस पर शिकायत करने पर बनाया गया लेकिन फिर रात को लाइट चली गई तीसरे दिन लाइट फिर चले जाने पर कई बार अहियापुर स्थित पावर हाउस पर शिकायत करने पर लाइनमैन द्वारा पैसे की मांग की गई और यह कहकर लाइट नहीं बनाया गया कि जब पैसा देगें तभी लाइट बनेगी सुबह सुबह लाइट ना होने के कारण घरों में बच्चे बड़ों के साथ-साथ सभी परेशान हैं जिससे लोगों को बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है । पूरी रात लाइट कटी रही,अभी 1:00 बजे दोपहर में लाइट आई है। कृपया विभागीय अधिकारी का ध्यान आकृष्ट है।

बाइक सवार बिजली की पोल से टकराया बुरी तरह जख्मी

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के मदापुर गांव निवासी रमेश पुत्र नंदू उम्र 30 वर्ष जामुन बेचकर रामनगर वाराणसी से वापस घर जा रहा था कि मोटर साइकिल अनियंत्रित हो कर अहरौरा चकिया रोड पर स्थित आनंदीपुर गांव के पास बिजली के पोल से टकरा गई जिससे रमेश गंभीर रूप से जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों ने 108 नंबर पर फोन कर एंबुलेंस की सहायता से घायल युवक को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए तत्पश्चात परिजनों को सूचित कर दिया गया चिकित्सक ने बताया की युवक की हालत नाजुक है प्राथमिक उपचार के बाद ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया गया।

2 लाख की हेरोइन के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

प्रखर मिजार्पुर। पुलिस अधीक्षक 'संतोष कुमार मिश्रा' द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों के विरूद्ध तथा अवैध मादक पदार्थों की तस्करी व बिक्री पर अंकुश लगाते हुए तस्करी में संलिप्त अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष को निर्देश दिया गया है। उक्त निर्देश के अनुक्रम में क्षेत्राधिकारी चुनार के नेतृत्व में थाना चुनार पुलिस बल की बड़ी सफलता हाथ लगी है। आज दिनांकः 27.06.2023 को थाना चुनार पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर की सूचना के आधार पर थाना चुनार क्षेत्र से अभियुक्त ओमप्रकाश सिंह उर्फ बबलू पुत्र जयशंकर सिंह निवासी नेवढ़िया थाना चुनार जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार किया गया, जिसके कब्जे से 20 ग्राम हेरोइन (अनुमानित कीमत 02 लाख) बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना चुनार पर मु0अ0स0-222/2023 धारा 8/21एनडीपीएसएक्ट पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार अभियुक्त को जेल भेजा गया।

डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद पांडेय हिंदी के बीस बड़े लेखकों में शामिल

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। स्वर्गीय डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद पांडेय की स्मृति में आयोजित दो दिवसीय समारोह हुआ संपन्न` इस दिन डॉक्टर पांडेय की साहित्यिक रचनाओं पर चर्चा और व्याख्यान दिए गए इसके अलावा उनकी याद में दिए जाने वाले सृजन शिखर सम्मान और युवा पुरस्कार से चुने गए रचनाकारों को सम्मानित और पुरस्कृत किया गया` कार्यक्रम के पहले सत्र में समकालीन हिंदी उपन्यासों के गाँव पर अकादमिक चर्चा की गयी जिसकी अध्यक्षता प्रफेसर विजय बहादुर सिंह ने की` इस सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में गौरहरि दास और संजय अलंग शामिल हुए` वक्ताओं प्रफेसर अवधेश प्रधान, प्रभात मिश्र, रविनंदन सिंह, सुधाकर अदीब, डॉक्टर मुक्ता, प्रफेसर बलिराज

पांडेय ने हिंदी उपन्यासों के गाँव के संदर्भ में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद पांडेय के उपन्यास गाँव बेगाँव पर वक्तव्य दिए` गौरहरि दास ने उपन्यास का विश्लेषण मॉक-एपिक के संदर्भ में किया तो प्रफेसर शिवनारायण ने उपन्यास को कम्पॉज़िट भाषा और संस्कृति के मापदंडों पर खरा बताया डॉक्टर मुक्ता ने उपन्यास गाँव बेगाँव के लिए कहा कि हम सब के अंदर कहीं न कहीं एक गाँव है और ये उपन्यास पढ़ते हुए हम उस गाँव की ओर मुड़ जाते हैं` कार्यक्रम के समपूर्ती सत्र में पद्मभूशन वाई लक्ष्मी प्रसाद और समकालीन भारतीय साहित्य के सम्पादक बलराम को सृजन शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया उन्हें प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मान राशि के तौर पे एक एक लाख रुपय की राशि प्रदान की गयी।

यूनियन बैंक और फिनो बैंक मिलकर बीसी एजेंट्स द्वारा उत्तर प्रदेश में सरकारी योजनाओं के बारे में जागरुकता और बैंकिंग की बढ़ाएंगे उपलब्धता

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया (यूनियन बैंक) और फिनो पेमेंट्स बैंक (फिनो बैंक) ने मिलकर बैंकिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर को उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में ज्यादा गहराई तक ले जाने की योजना बनाई है ताकि यहाँ की आबादी तक बैंकिंग सेवाओं का लाभ पहुँचाया जा सके` देश में सबसे ज्यादा ग्रामीण आबादी उत्तर प्रदेश में निवास करती है 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की 19.98 करोड़ की आबादी में 78 प्रतिशत आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है` सिद्धगिरी बाग स्थित एक होटल में मंगलवार को यूनियन बैंक और फिनो बैंक द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में वित्तीय समावेशन, डिजिटल बैंकिंग के महत्व और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, जैसे

अटल पेंशन योजना, पीएम जीवन ज्योति योजना, पीएम सुरक्षा बीमा योजना की जागरुकता के बारे में चर्चा की गई` इस कार्यक्रम में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों में मुख्य अतिथि मनोज कुमार, जीएम (फाईनेंशल इंक्लुजन विभाग), गिरीश चंद जोशी, जीएम (वाराणसी), संसार चंद, रीजनल हेड (वाराणसी) ,फिनो बैंक के अधिकारियों, भूपनारायणन यादव, वाईस प्रेसिडेंट एवं मनीष द्विवेदी, जोनल हेड (यूपी ईस्ट) और यूनियन बैंक के 200 से ज्यादा बिजनेस कॉरेस्पॉन्डैंट (बीसी) एजेंट्स, जिनका प्रबंधन फिनो बैंक करता है ने हिस्सा लिया` ध्यान देने वाली बात है कि यूनियन बैंक के कॉर्पोरेट बीसी के रूप में फिनो बैंक देश में 4800 से ज्यादा बीसी एजेंट्स का प्रबंधन करता है जिनमें 1400 से ज्यादा एजेंट उत्तर प्रदेश में दूर दराज के इलाकों में बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं` इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मनोज कुमार, जनरल मैनेजर (फाईनेंशल समावेशन), यूनियन बैंक ने कहा आबादी की अच्छी वित्तीय सेहत के लिए बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता बहुत जरूरी है यूपी में फिनो बैंक के अंतर्गत हमारी 1400 से ज्यादा टेक-इनेबल्ड बीसी एजेंट्स बैंकिंग को घर-घर पहुँचाने का उल्लेखनीय काम कर रही हैं।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चोरसंड में बाहर की दवा लिखकर चिकित्सक कर रहे कमीशनखोरी

प्रखर जौनपुर। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार जहां बृजेश पाठक के नेतृत्व में बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था की बात करती है वही जमीन पर हकीकत बिल्कुल अलग थलग दिखाई देती है. ताजा मामला जौनपुर के गौराबादशाहपुर चोरसंड सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का है जहां पर चिकित्सक मनमानी ढंग से बाहर मेडिकल स्टोर की दवाइयां और जांच लिख रहे हैं जिससे मरीजों को अतिरिक्त पैसा देना पड़ रहा। स्थानीय लोगों की माने तो डॉक्टर कोरे कागज पर बाहर की दवाएं लिखकर मरीजों से अप्रत्यक्ष रूप से पैसा ऐंठते हैं। स्वतंत्र पत्रकार अर्जुन राय बताते हैं कि तीमारदारों के लिए ठंडे पानी को पीने के नाम पर बनाया गया आरो पलांट सिर्फ शोपीस बना हुआ है और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में बने शौचालयों पर हमेशा ताले लटकते रहते हैं। अब बड़ा सवाल ये है कि स्थानीय जनप्रतिनिधि इस मामले को कितनी गंभीरता के साथ लेते हैं क्या उन्हें मरीजों और मजलूमों की चिंता है या वो भी नौकरशाही से मिले जुले है. चिकित्साधिक मनोज गौतम बताते हैं कि सीएचसी पर पर्याप्त दवाएं हैं और आधुनिक मशीनों के द्वारा सारी जांच के यंत्र मौजूद हैं।

आप ने एसडीओ विद्युत को दिया पत्रक

प्रखर पिंडरा वाराणसी। प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर मंगलवार को आम आदमी पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकताओं ने पिंडरा स्थित विद्युत उपकेंद्र पर अघोषित विद्युत कटौती के खिलाफ पत्रक सौपा। सुबह 11 बजे विद्युत उपकेंद्र पर पहुचे आप के कार्यकर्ता भीषण गर्मी में अघोषित विद्युत कटौती मुक्त करने, 11 के वी के जर्जर तार को बदलने, बिजली के तारों के चलते मृत्यु व्यक्ति को मुआवजा देने , बिजली विभाग में रिक्त पदों पर भर्ती समेत अनेक समस्याओं को लेकर एसडीओ पिंडरा संजीव श्रीवास्तव को मुख्यमंत्री को सम्बोधित पत्रक सौंपा। इस दौरान प्रमोद पांडेय,पप्पू सिंह, विजयनाथ पांडेय,मूलचंद कवि, ज्ञानेश, भगवान पटेल, विनोद व रामधनी समेत अनेक लोग रहे।

ऑनलाइन ट्रेडिंग खुदरा व्यापारियों को कर रहा कंगाल : आरिफ हबीब

सौ पचास कॉरपोरेट घराने जब घर घर बेचेंगे माल, तब खुदरा व्यापारी का जीवन होगा बदहाल : घनश्याम साहू

प्रखर जौनपुर। ऑनलाइन ट्रेडिंग के विरोध में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष पूर्व सांसद पूर्व मंत्री बनवारी लाल कंछल के आवाहन पर व्यापार मंडल के प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष इंद्रभान सिंह इंदू के निर्देश पर जिला महामंत्री आरिफ हबीब, नगर अध्यक्ष घनश्याम साहू, युवा जिला अध्यक्ष अरुण शुक्ला के नेतृत्व में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संबोधित ज्ञापन जिला अधिकारी के माध्यम से दिया गया। डिप्टी कलेक्टर शिवानी सिंह को ज्ञापन सौंपते हुए व्यापारी नेता आरिफ हबीब ने कहा कि सौ पचास कारपोरेट घराने खुदरा व्यापार को तबाह एवं बर्बाद कर रहे हैं आज 7 करोड़ खुदरा व्यापारी और उनके कर्मचारी तंगहाली और बदहाली का जीवन व्यतीत कर रहा है इसलिए

ऑनलाइन ट्रेडिंग पर प्रभावी अंकुश लगाने की मांग की जाती है। नगर अध्यक्ष घनश्याम साहू ने कहा कि ऑनलाइन कारोबार बड़ी तेज गति से पैर पसार रहा है ऐसे में छोटे और मंझोले व्यापारी कंगाली के कगार पर है हम व्यापारी भारत सरकार से मांग करते है की एक प्रभावी रणनीति बनाकर ऑनलाइन ट्रेडिंग पर पाबंदी लगाई जाए। युवा जिलाध्यक्ष अरुण शुक्ल ने कहा कि खुदरा,छोटे और मंझोले व्यापारियों के निकट रोजी रोटी और परिवार चलाने का संकट आ गया है ऐसे में ऑनलाइन ट्रेडिंग पर गंभीर होकर आवश्यक करवाई की मांग करते हैं। उक्त अवसर पर उपस्थित व्यापारियों ने प्रधानमंत्री से अपील करते हुए कहा कि 7 करोड़ व्यापारियों और उनके कर्मचारियों का जीवन सौ पचास कॉरपोरेट घराने के पैरों तले कुचलने जैसा है ऑनलाइन ट्रेडिंग इस लिए इस पर प्रभावी अंकुश जरूरी है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हस्तों हिन्दू जनजागृति समिति के रमेश शिंदे को सांस्कृतिक योद्धा पुरस्कार 2023

प्रखर डेस्क। हिन्दू जनजागृति समिति के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री. रमेश शिंदे को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मा. योगी आदित्यनाथजी एवं भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्षा सुमित्रा महाजनजी के हस्तों सांस्कृतिक योद्धा पुरस्कार 2023 प्रदान किया गया। स्मृति चिन्ह एवं एक लाख रुपयों का धनादेश, ऐसे इस पुरस्कार का स्वरूप है । यह पुरस्कार वितरण समारोह सेव कल्चर सेव इंडिया फाऊंडेशन की ओर से उत्तर प्रदेश राज्य के ग्रेटर नोएडा के गौतमबुद्ध विद्यापीठ में संपन्न हुआ। इस अवसर पर व्यासपीठ पर सेव कल्चर सेव इंडिया फाऊंडेशन के संस्थापक तथा भारत के सूचना आयुक्त श्री. उदय माहूरकर भी उपस्थित थे । राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति पर कुदृष्टि रखनेवालों के विरोध में निरंतर संवैधानिक मार्ग से संघर्ष करना, चित्रकार एम.एफ. हुसैन एवं डॉ. जाकिर नाईक के राष्ट्र एवं समाज विरोधी स्वरूप को लोगों के सामने लाना, इसके साथ ही भारतीय संस्कृति के रक्षणार्थ पुस्तकों का लेखन करना, इसके लिए भी यह पुरस्कार श्री. रमेश शिंदे को दिया जाना घोषित किया

गया। इस अवसर पर विकृत साहित्य की निर्मिति कर देश की युवा पीढी का जीवन उद्ध्वस्त करनेवालों को समाज के सामने लाने के लिए कृपया ध्यान दे इस प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्यमंत्री मा. योगी आदित्यनाथ के हस्तों किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगीजी बोले कि भारतीयों ने अनेक वर्ष ब्रिटिश एवं मुगलों के अत्याचार सहन किए; परंतु जब उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं मंदिरों पर आघात करना प्रारंभ किया तब भारतीयों ने करारा जबाव देना प्रारंभ किया। भारतीयों ने कभी भी संस्कृति पर आक्रमण सहन नहीं किए। वर्तमान में डिजिटल माध्यम से संस्कृति पर आक्रमण हो रहे हैं। हाल ही में गेमिंग एप के माध्यम से धर्मांतर किए जाने का प्रकरण उत्तर प्रदेश पुलिस ने उजागर किया है। दिल्ली की घटना सभी ने देखी होगी, किस प्रकार लडकियों को प्रेम के जाल में फांसकर, फिर उनकी हत्या की गई। इस संदर्भ में हमने सर्वप्रथम कानून बनाया; परंतु प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक कुटुंब में जागरुकता निर्माण होने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस अवसर पर संस्कृती रक्षा के लिए लडनेवाले हिन्दू फ्रंट फॉर जस्टिस के प्रवक्ता तथा सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन को भी यह पुरस्कार दिया गया। इसके साथ ही फिल्म निमार्ता प्रवीण चतुवेर्दी, पत्रकार स्वाती गोयल शर्मा, पत्रकार प्रदीप भंडारी, वैशाली शाह, संजीव नेवर एवं मनीष बर्दिया आदी लोगों को सांस्कृतिक योद्धा पुरस्कार 2023 से सम्मानित किए गए।

त्यौहारों को देखते हुए स्थिति से निपटने के लिए किया गया बलवा ड्रिल अभ्यास

प्रखर जौनपुर। आगामी त्यौहारों के मद्देनजर कानून व्यवस्था बनाये रखने व किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पुलिस बलवा ड्रिल का अभ्यास किया जिले के तेज तरार्र पुलिस अधीक्षक अजय पाल द्वारा पुलिस की कार्यकुशलता को और निपुण व सशक्त बनाने के लिए बलवा ड्रिल कराने के लिए निर्देशित किया गया। मंगलवार को पुलिस लाइन्स के परेड ग्राउंड पर अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शैलेन्द्र कुमार सिंह के दिशा निर्देशन व पर्यवेक्षण में बलवा ड्रिल कराया गया। बलवा ड्रिल में जिले के समस्त थानों से उप निरीक्षक व मुख्य आरक्षी व आरक्षी सम्मिलित हुए, जिनके द्वारा बलवा ड्रिल का अभ्यास किया गया। ड्रिल के दौरान आशु गैस के गोले व रबर बुलेट का प्रयोग करने की बिधि बताकर रिहल्सल कराया गया। ड्रिल के रिहल्सल से पुलिस बल को आने वाले आगामी त्योहार व अन्य परिस्थितियों से निपटने में मदद मिलेगी। बता दें कि बलवा ड्रिल में कुल 9 पार्टियों ने हिस्सा लिया जिसमें एल0आई0यू0 ,

सिविल पुलिस , फायर सर्विस , अश्रु गैस , लाठी पार्टी , फायर पार्टी , रिजर्व पार्टी , फस्ट ऐड , वीडियों ग्राफी की पार्टियों ने हिस्सा लिया। बलवा ड्रिल के दौरान क्षेत्राधिकारी नगर कुलदीप कुमार गुप्ता, क्षेत्राधिकारी सदर संत प्रसाद उपाध्याय, क्षेत्राधिकारी देवेश सिंह व प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन्स अनुपम सिंह व अन्य अधिकारी और कर्मचारीगण मौजूद रहें।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं